तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 9, अंक- 10, सितंबर 2021, मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

जीवन जब अर्पित किया सरस्वती के नाम
उस साधक का जगत यह खूब करे सम्मान

साधारण नहीं है शिक्षक

नवाचारों में अग्रणी
सुविचारों का धनी
इरादों में हिमालय
हृदय से प्रशांत
विजय से विक्रांत
राधाकृष्णन जैसा भारतरत्न
होता है शिक्षक

युधिष्ठिर जैसा धर्मी
भगीरथ जैसा कर्मी
कर्ण जैसा दानवीर
अर्जुन जैसा लक्ष्य चीर
चाणक्य जैसा बुद्धिमान होता है शिक्षक।

पत्थरों में शिल्पकार
कच्ची मिट्टी का कुम्हार
सूक्ष्मता में स्वर्णकार
कल्पनाओं से चित्रकार
समाज का दर्पण होता है शिक्षक।

इमारतों में इबारत
पत्थरों में पारस
फलों में श्रीफल
पक्षियों में सारस
रसों में मधुरस
झरनों में कल-कल गंगाजल-सा
पवित्र होता हैं शिक्षक

विद्यालय ही देवालय का मंत्र
बाल देवो भव का महामंत्र
बच्चों को आनंदमय शिक्षा
देकर प्रकाश फैलाएँ सर्वत्र
गिजुभाई जैसा दिवास्वप्न होता है शिक्षक।

समरसता का प्रतीक
राष्ट्रीय एकता का दीप
शिष्य के लक्ष्य का पथिक
मोतियों से भरी जिसकी सीप
ऐसा व्यक्तित्व कोई साधारण नहीं
ज्ञान का प्रकाशमान होता है शिक्षक।

गोपाल कौशल भोजवाल
नागदा, जिला धार, मप्र

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

सितंबर 2021

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
कँवर पाल
शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
डॉ. महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ. जे. गणेशन
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

अंशज सिंह
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

सम्वर्तक सिंह
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन-1)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिजाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Dilbag Singh on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I,

New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"दुष्ट की विद्या विवाद के लिए, धन मद के लिए और शक्ति दूसरों को पीड़ा पहुँचाने के लिए होती है। ठीक इसके विपरीत सज्जनों की विद्या ज्ञान दान, धन परार्थ तथा शक्ति दूसरों की रक्षा के लिए होती है।

- राष्ट्र निर्माता होता है शिक्षकः राष्ट्रपति कोविन्द 5
- हमारे शिक्षकों का बच्चों के साथ पेशेवर नहीं, पारिवारिक रिश्ता है : प्रधानमंत्री 6
- भिवानी की ममता पालीवाल को मिला राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 8
- शिक्षक दिवस पर नामांकन बढ़ाने वाले विद्यालयों को किया सम्मानित 10
- विश्व फोटोग्राफी दिवस पर विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा 12
- खूब उत्साह से मनाया गया 48वाँ वार्षिक विज्ञान-उत्सव 14
- विद्यालय खुलने के बाद भी चलते रहेंगे ई-विद्यालय 16
- वैश्विक पटल पर छाई हिंदी 18
- नवीन प्रतिमान गढ़ता अम्बाला का जनसूई विद्यालय 20
- अध्यापिका रीटा के लिए शिक्षण पेशा नहीं, इबादत है 23
- चित्रकारी में दक्ष पारूल व प्रेम राज 24
- लाडली जन्मोत्सव की उड़ान सरकारी स्कूलों से निकलकर विदेशों तक पहुँची 25
- खेल-खेल में विज्ञान 28
- गणित बिन सब सून 30
- वंश 31
- Always Live in the Heart of Your Students... 32
- Connecting Young Minds to School 34
- School Bullying 37
- Meditation-a Scientific way to Control Human Mind 40
- Stranger than Fiction 42
- Life Lessons from Animals 46
- Amazing Facts 48
- General Quiz 49
- आपके पत्र 50

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

गुरु पाद पद्म में, वंदन है शत वंदन है

हमारे देश में सितंबर का महीना वर्षा की समाप्ति पर सुहावनी शरद ऋतु के आगमन और उसके स्वागत का महीना तो होता ही है, 5 सितंबर को शिक्षक दिवस, 14 सितंबर को हिंदी दिवस और 25 सितंबर को एकात्म मानवदर्शन विचार प्रणेता पं. दीन दयाल उपाध्याय जी की जयंती होती है।

इस समय हमारा संदर्भ शिक्षक दिवस का है। 5 सितंबर का दिन राष्ट्र ने अपने शिक्षकों को समर्पित कर रखा है। यह दिन भारतीय दर्शन के महान अध्येता एवं उत्कृष्ट चिंतक हमारे पहले उपराष्ट्रपति और दूसरे राष्ट्रपति डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी का जन्मदिन है। मगर इन सबसे पहले वे अपने आपको शिक्षक मानते थे और अपनी इसी मान्यता को सिद्ध करने के लिए उन्होंने अपने जन्मदिन को 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाए जाने की स्वीकृति दी। हमारे प्रधानमंत्री ने जिस 'नव भारत' निर्माण का संकल्प लिया है, उस यज्ञ में शिक्षकों की आहुति बेहद महत्त्वपूर्ण है।

आइये, इस अवसर पर संकल्प लें कि शिक्षा का आलोक हर विद्यार्थी तक पहुँचाएँगे, शिक्षा के अधिकार से प्रदेश का कोई भी बच्चा वंचित नहीं रहेगा। हम मनसा-वाचा-कर्मणा उपलब्ध साधनों से अपनी संपूर्ण सामर्थ्य, शक्ति और क्षमता से विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षण देंगे ताकि शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रदेश सिरमौर बने।

- संपादक

राष्ट्र निर्माता होता है शिक्षक: राष्ट्रपति कोविन्द

छात्रों की अन्तर्निहित प्रतिभा के संयोजन की प्राथमिक जिम्मेदारी शिक्षकों की

डॉ. प्रदीप राठौर

राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविन्द ने कहा कि छात्रों की अंतर्निहित प्रतिभा के संयोजन की प्राथमिक जिम्मेदारी शिक्षकों की होती है; एक अच्छा शिक्षक व्यक्तित्व-निर्माता, समाज-निर्माता और राष्ट्र-निर्माता होता है। वे शिक्षक दिवस के अवसर पर 5 सितंबर, 2021 को वर्चुअल पुरस्कार समारोह के दौरान शिक्षकों को संबोधित कर रहे थे। समारोह में देश भर के 44 शिक्षकों को राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

राष्ट्रपति ने पुरस्कार प्राप्त करने वाले सभी शिक्षकों को उनके विशिष्ट योगदान के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि ऐसे शिक्षक, उनके इस विश्वास को मज़बूत करते हैं कि आने वाली पीढ़ी का भविष्य हमारे योग्य शिक्षकों के हाथों में सुरक्षित है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में शिक्षकों का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। लोग अपने शिक्षकों को जीवन भर याद करते हैं। जो शिक्षक अपने छात्रों का स्नेह और समर्पण के साथ मार्गदर्शन करते हैं, उन्हें अपने छात्रों से हमेशा सम्मान मिलता है।

राष्ट्रपति ने शिक्षकों से आग्रह किया कि वे अपने छात्रों को एक सुनहरे भविष्य की कल्पना करने और उनकी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए व आवश्यक दक्षता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करें और सक्षम बनाएँ। उन्होंने कहा कि शिक्षकों का यह कर्तव्य है कि वे अपने छात्रों में पढ़ाई के प्रति रुचि पैदा करें। संवेदनशील शिक्षक अपने व्यवहार, आचरण और शिक्षण से छात्रों के भविष्य को नया व बेहतर रूप दे सकते हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षकों को इस बात पर विशेष ध्यान देना चाहिए कि प्रत्येक छात्र की अलग-अलग क्षमता, प्रतिभा, मनोविज्ञान और सामाजिक पृष्ठभूमि होती है। प्रत्येक बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए उनकी विशेष आवश्यकताओं, रुचियों और क्षमताओं पर जोर दिया जाना चाहिए।

राष्ट्रपति ने कहा कि पिछले डेढ़ साल से पूरी दुनिया कोरोना महामारी से पैदा हुए संकट के दौर से गुज़र रही है। सभी स्कूल-कॉलेज के बंद होने के बाद भी शिक्षकों ने बच्चों की पढ़ाई नहीं रुकने दी। शिक्षकों ने बहुत ही कम

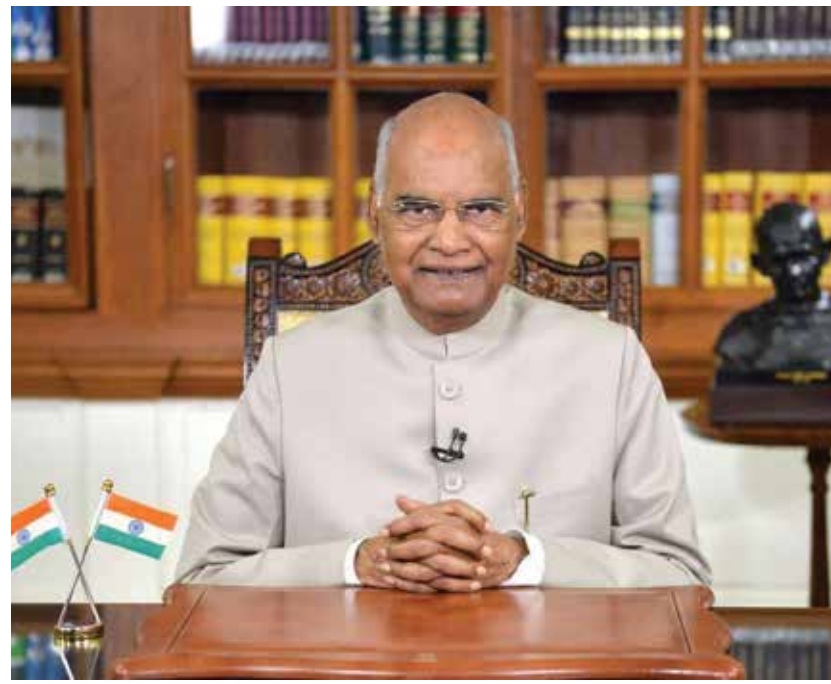

समय में डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग करना सीखा और शिक्षण प्रक्रिया को जारी रखा। उन्होंने कहा कि कुछ शिक्षकों ने अपनी कड़ी मेहनत और समर्पण के जरिये स्कूलों में बुनियादी ढाँचे का उल्लेखनीय विकास किया है। उन्होंने ऐसे समर्पित शिक्षकों की सराहना की और आशा व्यक्त करते हुए कहा कि पूरा शिक्षक समुदाय बदलती परिस्थितियों के अनुसार अपनी शिक्षण पद्धति को बदलता रहेगा।

राष्ट्रपति ने कहा कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति के रूप में स्थापित करने का महत्त्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया गया है। हमें विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा देनी है, जो ज्ञान पर आधारित न्याय-संगत समाज के निर्माण में सहायक हो। हमारी शिक्षा प्रणाली ऐसी होनी चाहिए जो छात्रों की संवैधानिक मूल्यों और मौलिक कर्तव्यों के लिए प्रतिबद्धता विकसित करे, देशभक्ति की भावना को मजबूत करे और बदलते वैश्विक परिदृश्य में उन्हें उनकी भूमिका से अवगत कराए।

राष्ट्रपति ने कहा कि केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने शिक्षकों को सक्षम बनाने के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण कदम उठाए हैं। मंत्रालय ने निष्ठा नामक एकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया है, जिसके तहत शिक्षकों के लिए ऑनलाइन क्षमता निर्माण के प्रयास किए जा रहे हैं। इसके अलावा, प्रज्ञाता (यानी डिजिटल शिक्षा पर पिछले साल जारी दिशा-निर्देश) कोविड महामारी के संकट के दौरान भी शिक्षा की गति को बनाए रखने की दृष्टि से एक सराहनीय कदम है। उन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी नए रास्ते खोजने के लिए केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय की पूरी टीम की सराहना की।

केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान ने स्वागत भाषण दिया, जबकि शिक्षा राज्य मंत्री श्रीमती अन्नपूर्णा देवी ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

इससे पहले राष्ट्रपति ने भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि दी। राष्ट्रपति और राष्ट्रपति भवन के अधिकारियों ने राष्ट्रपति भवन में डॉ. राधाकृष्णन के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की।

drpradeeprathore@gmail.com

हमारे शिक्षकों का बच्चों के साथ पेशेवर नहीं, पारिवारिक रिश्ता है : प्रधानमंत्री

भारत के शिक्षक न केवल किसी वैश्विक मानक पर खरे उतरते हैं, बल्कि उनके पास अपनी विशेष पूँजी भी होती है। उनकी यह विशेष पूँजी, विशेष शक्ति उनके भीतर के भारतीय संस्कार हैं। उन्होंने कहा कि हमारे शिक्षक अपने काम को केवल पेशा नहीं मानते हैं, उनके लिए शिक्षण एक मानवीय संवेदना और एक पवित्र नैतिक कर्तव्य है। प्रधानमंत्री ने कहा इसीलिए हमारे देश में शिक्षक और बच्चों के बीच केवल पेशेवर संबंध नहीं होते, बल्कि एक पारिवारिक रिश्ता होता है और यह रिश्ता जीवन भर के लिए होता है।

यह बात प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने बीते दिनों 'शिक्षक पर्व' के पहले सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कही। इस साल होने वाले 'शिक्षक पर्व' का थीम सब्जेक्ट गुणवत्ता और सतत विद्यालयः भारत में विद्यालयों से ज्ञान प्राप्ति है। इस कार्यक्रम में स्थानीय स्तरों तक शहरों और गाँवों में शिक्षा की निरंतरता सुनिश्चित की जा रही है। साथ ही देशभर के स्कूलों में गुणवत्ता, समावेशी प्रथाओं और स्थायित्व में सुधार के लिए नए तौर-तरीकों को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है।

प्रधानमंत्री ने राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करने वाले शिक्षकों को बधाई दी। उन्होंने कठिन समय में देश के छात्रों के भविष्य के प्रति शिक्षकों के योगदान की सराहना

की। उन्होंने कहा कि आज शिक्षक पर्व के अवसर पर कई नई योजनाएँ शुरू की गई हैं। ये महत्त्वपूर्ण भी हैं, क्योंकि देश इस समय आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और आज़ादी के 100 साल बाद भारत कैसा होगा, इसके लिए नए संकल्प ले रहा है। प्रधानमंत्री ने महामारी की चुनौती का सामना करने के लिए छात्रों, शिक्षकों और पूरे

शैक्षणिक समुदाय की प्रशंसा की और उससे कठिन समय का मुकाबला करने के लिए विकसित की गयी क्षमताओं को और आगे बढ़ाने का आग्रह किया। उन्होंने कहा, यदि हम परिवर्तन के दौर में हैं, तो सौभाग्य से हमारे पास आधुनिक और भविष्य की जरूरतों के अनुरूप नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी है।

प्रधानमंत्री ने भारतीय सांकेतिक भाषा शब्दकोश (श्रवण बाधितों के लिए ऑडियो और पाठ आधारित सांकेतिक भाषा वीडियो, ज्ञान के सार्वभौमिक डिजाइन के अनुरूप), बोलने वाली किताबें (टॉकिंग बुक्स, नेत्रहीनों के लिए ऑडियो किताबें), सीबीएसई की स्कूल गुणवत्ता आश्वासन और आकलन रूपरेखा, निपुण भारत के लिए 'निष्ठा' शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम और विद्यांजलि पोर्टल (विद्यालय के विकास के लिए शिक्षा स्वयंसेवकों/ दाताओं/ सीएसआर योगदानकर्ताओं की सुविधा के लिए) का भी शुभारंभ किया।

प्रधानमंत्री ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के निर्माण और उसके क्रियान्वयन में हर स्तर पर शिक्षाविदों, विशेषज्ञों, शिक्षकों के योगदान की सराहना की। उन्होंने सभी से इस भागीदारी को एक नए स्तर पर ले जाने और इसमें समाज को भी शामिल करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में ये बदलाव न केवल नीति आधारित हैं, बल्कि भागीदारी आधारित भी हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास के साथ सबका प्रयास के देश के संकल्प के लिए विद्यांजलि 2.0 एक मंच की तरह है। इसके लिए समाज में, हमारे निजी क्षेत्र को आगे आना होगा और सरकारी स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने में योगदान देना होगा।

प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में जनभागीदारी फिर से भारत का राष्ट्रीय चरित्र बनती जा रही है। पिछले 6-7 वर्षों में जनभागीदारी के सामर्थ्य के कारण ही भारत में बहुत से ऐसे कार्य हुए हैं, जिनकी पहले कल्पना करना कठिन था। उन्होंने कहा कि जब समाज मिलकर कुछ करता है,तो वांछित परिणाम सुनिश्चित होते हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि जीवन के किसी भी क्षेत्र में युवाओं के भविष्य को आकार देने में सभी की भूमिका है। उन्होंने हाल ही में संपन्न ओलंपिक और पैरालंपिक में देश के एथलीटों के शानदार प्रदर्शन को याद किया। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि प्रत्येक खिलाड़ी के द्वारा आज़ादी के अमृत महोत्सव के दौरान कम से कम 75 स्कूलों का दौरा करने के उनके अनुरोध को एथलीटों ने स्वीकार कर लिया है। उन्होंने कहा कि इससे छात्रों को प्रेरणा मिलेगी और कई प्रतिभाशाली छात्रों को खेल के क्षेत्र में आगे बढ़ने का प्रोत्साहन मिलेगा।

प्रधानमंत्री ने कहा कि किसी भी देश की प्रगति के लिए शिक्षा न केवल समावेशी होनी चाहिए बल्कि समान होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि नेशनल डिजिटल आर्किटेक्चर अर्थात् एन-डियर शिक्षा में असमानता को खत्म करके उसे आधुनिक बनाने में एक बड़ी भूमिका निभा सकता है। उन्होंने कहा कि जैसे यूपीआई इंटरफेस ने बैंकिंग सेक्टर को क्रांतिकारी बनाने का कार्य किया है, वैसे ही एन-डियर भी सभी विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों के बीच सुपर-कनेक्टर के रूप में कार्य करेगा। उन्होंने कहा कि देश टॉकिंग बुक्स और ऑडियोबुक जैसी तकनीक को शिक्षा का हिस्सा बना रहा है।

स्कूल क्वालिटी असेसमेंट एंड एश्योरेंस फ्रेमवर्क (एसक्यूएएएफ) पाठ्यक्रम, शिक्षाशास्त्र, मूल्यांकन, बुनियादी ढाँचे, समावेशी प्रथाओं और शासन प्रक्रिया जैसे आयामों में एक सामान्य वैज्ञानिक ढाँचे की अनुपस्थिति की कमी को दूर करेगा। एसक्यूएएएफ इस असमानता को दूर करने में भी मदद करेगा।

उन्होंने कहा कि तेजी से बदलते इस युग में हमारे शिक्षकों को भी नई व्यवस्थाओं और तकनीकों के बारे में शीघ्रता से सीखना होगा। उन्होंने कहा कि देश 'निष्ठा' प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से अपने शिक्षकों को इन्हीं परिवर्तनों के लिए तैयार कर रहा है।

डॉ. प्रदीप राठौर
drpradeeprathore@gmail.com

वैश्विक शिक्षक पुरस्कार की सूची में दो भारतीय अध्यापक शामिल

बिहार के भागलपुर निवासी गणित के शिक्षक सत्यम मिश्रा व हैदराबाद की सामाजिक अध्ययन, अंग्रेजी व गणित की शिक्षिका मेघना मुसुनूरी ने बड़ी उपलब्धि हासिल की है। दोनों बीते दिनों घोषित 10 लाख डालर (करीब 7.35 करोड़ रुपये) के वैश्विक शिक्षक पुरस्कार पाने वाले 50 अध्यापकों में शामिल हैं। यूनेस्को के सहयोग से वर्की फाउंडेशन द्वारा दिए जाने वाले इस पुरस्कार के लिए 121 देशों से आठ हज़ार से अधिक नामांकन आए थे।

सत्यम मिश्रा को गणित को रुचिकर बनाने के मद्देनजर इस पुरस्कार के लिए चुना गया। उन्होंने गुणा के आसान फार्मूले इजाद किए हैं। मेघना मुसुनूरी शिक्षा के संदर्भ में भविष्यवादी, परोपकारी व जुनूनी उद्यमी हैं। वे फाउंटेनहेड ग्लोबल स्कूल एंड जूनियर कालेज की संस्थापक व अध्यक्ष हैं। साथ ही वह उद्यमी महिलाओं को ऑनलाइन मौजूदगी स्थापित करने में मार्गदर्शन करने वाली गूगल की संस्था वीमेन एंटरप्रेन्योर्स ऑन द वेब (डब्ल्यूईओडब्ल्यू) की हैदराबाद शाखा की भी अध्यक्ष हैं।

-'शिक्षा सारथी' डेस्क

भिवानी की ममता पालीवाल को मिला राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार

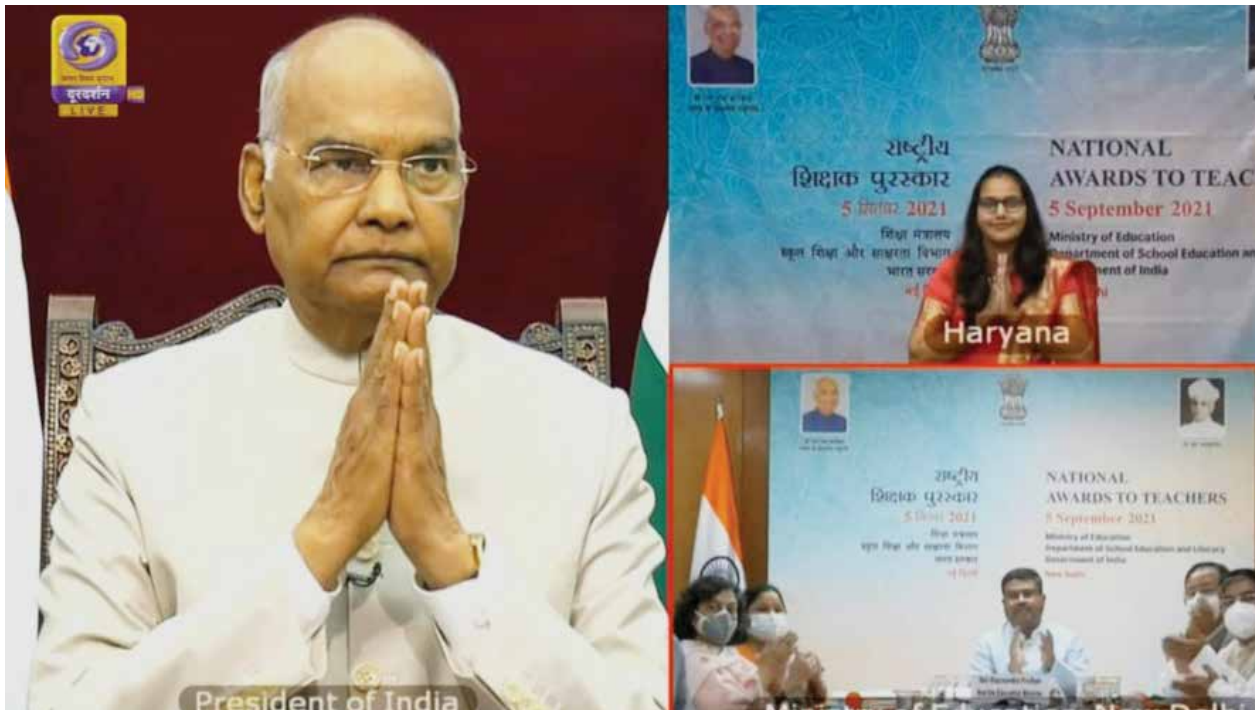

अध्यापक विद्यार्थियों के हमेशा आदर्श होते हैं। अध्यापक का दायित्व है कि वह पढ़ाई के अलावा विद्यार्थियों के ज्ञान में भी बढ़ोतरी करे। जीवन में विद्यार्थियों को हर कदम पर मार्गदर्शन की आवश्यकता है, क्योंकि अध्यापक विद्यार्थियों की परछाई होते हैं। उन्हें सही राह दिखाते हैं। अध्यापक को चाहिए कि वह विद्यार्थियों को इतना अच्छा बनाए कि समाज में लोग कह सकें कि वास्तव में एक शिक्षक ने अपना सही दायित्व निभाया है। शिक्षा में संस्कार दिखाई पड़ने चाहिएं। यह कहना है जिला भिवानी के गवर्नमेंट गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल की गणित प्राध्यापिका ममता पालीवाल का।

ममता ने बताया कि यह उनकी दस साल की कठिन परीक्षा का परिणाम है, जो उनका चयन नेशनल अवॉर्ड के लिए हुआ है। वह कहती हैं कि इस क्षण को वह कभी भूल नहीं पाएँगे। वह बताती है जैसे ही उन्हें फोन पर इसकी सूचना मिली तो घर में खुशी का माहौल बन गया। सबसे पहले उन्होंने अपने परिवार के साथ इस खुशी को सांझा किया उसके बाद बच्चों के व्हाट्सएप ग्रुप में यह मैसेज भेजा। उन्होंने बताया कि पंचकूला में

4 अगस्त को उनका नेशनल अवार्ड के लिए इंटरव्यू हुआ जिसमें उनसे अनेक प्रश्न पूछे गए। उन्होंने सहजता से सभी सवालों का जवाब दिया। एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि प्रेरणा कहीं से भी ली जा सकती है। वह ऐसे विद्यार्थियों को तैयार करना चाहती है जो समाज के लिए मार्गदर्शन का काम करें। इस अवसर पर ज्यूरी को अनेक सुझाव भी उन्होंने दिए।

प्राध्यापिका ममता पालीवाल ने बताया कि उन्होंने एमएससी और बीएड तक की पढ़ाई की हुई है। उन्होंने वर्ष 2005 में स्नातक की पढ़ाई फतेहचंद महिला महाविद्यालय, हिसार से की। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की मेरिट सूची में प्रथम स्थान प्राप्त किया। उन्होंने बताया की हैप्पी पब्लिक स्कूल, भिवानी से शिक्षक के रूप में करियर की शुरुआत की। वर्ष 2011 में उनका राजकीय कन्या हाई स्कूल में गणित अध्यापक के पद पर चयन हुआ तथा वर्ष 2016 में पदोन्नति हुई। ममता अब राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, भिवानी में गणित प्रवक्ता के पद पर कार्यरत हैं।

गणित प्रवक्ता के पद पर कार्य करते हुए एक वर्ष तक एनसीसी के कार्यभार को बेहतरीन ढंग से सँभाला क्योंकि वे स्वयं भी विद्यार्थी काल में एनसीसी सी सर्टिफिकेट कैडेट थी। विद्यालय में 2018 से अटल टिकरिंग लैब का चार्ज भी इन्हीं के पास है। वे कहती हैं कि उन्होंने नीति आयोग द्वारा स्थापित अटल लैब में विद्यार्थियों को बहुत कुछ सिखाया, जिससे उनकी

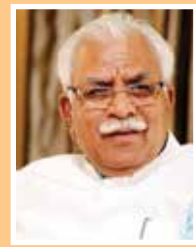

'शिक्षक दिवस' के अवसर पर मैं सभी शिक्षकों को शुभकामनाएँ देता हूँ। विद्या को देने के पुनीत कार्य का निर्वहन आप द्वारा होता है। यह दिन हमारे देश के दूसरे राष्ट्रपति डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी का जन्मदिन है। वे भारतीय दर्शन के महान अध्येता एवं उत्कृष्ट चिंतक थे। मगर इन सबसे पहले वे अपने आपको शिक्षक मानते थे और अपनी इसी मान्यता को सिद्ध करने के लिए उन्होंने अपने जन्म दिवस को 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाए जाने की स्वीकृति दी।

हर्ष का विषय है कि इस अवसर पर राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी द्वारा हरियाणा की बेटी व प्रसिद्ध गणित शिक्षिका सुश्री ममता पालीवाल जी को राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार-2021 से सम्मानित किया गया है। मैं इन्हें हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। कामना करता हूँ कि हमारे शिक्षक इसी तरह से प्रदेश के नाम को चार चाँद लगाते रहेंगे।

मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

डिसीजन, थिंकिंग पावर में रुचि पैदा की । उन्होंने बताया कि टिंकरिंग लैब के लिए एसआरएफ फाउंडेशन द्वारा दी गई ट्रेनिंग में विद्यार्थियों के साथ हमेशा बढ़-चढ़कर भाग लिया। उनके निर्देशों में छात्रों ने मैथ के वीडियो गेम बनाए जो कि विद्यार्थियों के लिए बहुत रुचिकर है।

सरकारी विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों सरकार द्वारा एनटीएसई यानी नेशनल टैलेंट सर्च एग्जाम की फ्री कोचिंग उपलब्ध कराई जिसमें उन्हें भिवानी का नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया। बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए उनकी एक छात्रा छवि ने लेवल फर्स्ट को पास किया। हरियाणा के सरकारी विद्यालय से मात्र यह एक ही चयन था जिसने हजारों विद्यार्थियों को प्रेरणा दी। इस उपलब्धि के लिए जिला स्तर पर श्री बनवारी लाल सहकारिता मंत्री व आयुक्त द्वारा सम्मानित किया गया।

उन्होंने छात्र हित के लिए अपने टिप्स इन लर्निंग मैसेज सेट किए हैं। खुद के बनाए खेलों से विद्यार्थियों को खेल-खेल में गणित विषय के पेपर समझने पर जोर दिया गया। टीम भावना से खेले जाने वाले इन खेलों से छात्रों की पढ़ाई के साथ-साथ खेल-भावना का विकास भी होता है। वे कहती हैं कि 4 अगस्त को ज्यूरी के सदस्यों के लिए टीचिंग लर्निंग मैटीरियल बहुत पसंद आए। गणित प्रवक्ता के पद पर कार्य करते हुए उनके निर्देशन में छात्राओं ने कक्षा 12 वीं के गणित विषय में बेहतरीन प्रदर्शन किया। कुछ विद्यार्थियों ने तो शत-प्रतिशत अंक भी हासिल किए।

उन्होंने बताया कि वे विद्यालय के सारे ऑनलाइन वर्क की प्रभारी भी हैं। वे सारा कार्य बड़ी जिम्मेदारी से करती हैं। कॉविड-19 के दौरान यू-ट्यूब चैनल शुरू किया तथा हस्तलिखित नोट्स छात्रों के लिए निःशुल्क उपलब्ध कराए। उनके द्वारा बनाये गये वीडियो टीवी पर भी प्रसारित किए जाते हैं। उन्होंने बताया कि उनके चार व्हाट्सएप ग्रुप हैं जिनमें किसी भी विद्यालय का विद्यार्थी जुड़ सकता है व प्रतिदिन अपना गृह-कार्य ले सकता है। उन्होंने बताया कि स्टेट लेवल नेहरू साइंस एंड मैथ्स एग्जिबिशन में लगातार दो बार भिवानी जिले को रिप्रेजेंट कर चुकी हैं। कोविड-19 के दौरान जूम एप से विद्यार्थियों की रोज क्लास लगवाई। अलग-अलग सॉफ्टवेयर के सहयोग से क्विज तैयार की ताकि छात्र छात्राओं को गणित विषय समझना आसान हो और विषय में इनकी रुचि बनी रहे। वे कहती है छात्रों को पढ़ाई के साथ-साथ रंगोली, आर्ट एंड क्राफ्ट, पौधागिरी, बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट आदि कलाओं को सिखाने के लिए विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। शिक्षा के क्षेत्र में बेहतरीन कार्य के लिए रोज़गार मंत्री व उपायुक्त द्वारा जिला स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। रोटरी क्लब आदि कई संस्थाओं द्वारा भी इन्हें सम्मानित किया जा चुका है।

सुरेन्द्र सिंह मलिक
गाँव- बुआना लाखु
तहसील-इसराना
जिला-पानीपत, हरियाणा

शिक्षक दिवस पर
नामांकन बढ़ाने वाले विद्यालयों को किया सम्मानित

सुदेश रानी

सरकारी विद्यालयों में नामांकन बढ़ाने के लिए अनेक विद्यालय मुखियाओं, अध्यापकों, विद्यालय प्रबंधन समितियों व पंचायतों ने अपने-अपने स्तर पर काफी सराहनीय कार्य किए हैं। इस बात को देखते हुए विभाग द्वारा इस वर्ष ऐसे विद्यालयों को सम्मानित करने का कार्यक्रम बनाया गया, जहाँ नामांकन में काफी वृद्धि हुई। विभाग के प्रवक्ता ने बताया कि अनेक गाँव ऐसे हैं, जहाँ जीरो ड्रॉपआउट हो गया है। इसमें विद्यालय मुखियाओं व अध्यापकों का स्थानीय पंचायतों ने भी भरपूर साथ दिया। छात्राओं के नामांकन में भी अभूतपूर्व वृद्धि देखने को मिली है। आउट ऑफ स्कूल रहने वाले विद्यार्थियों को विद्यालयों में प्रवेश दिलाया गया है।

इन विद्यालयों के मुखियों को शिक्षक दिवस के अवसर पर 5 सितंबर को जिला स्तरीय कार्यक्रमों में उपायुक्त/ अतिरिक्त उपायुक्त द्वारा प्रशंसा-पत्र प्रदान किया गया। सभी जिलों में ये कार्यक्रम खूब धूमधाम से आयोजित किए गए। सम्मान पाने वाले मुखियाओं का तो हौसला बढ़ा ही, साथ ही अन्यों के लिए भी वे प्रेरणा बने। विभाग द्वारा इसके लिए जिलावार बजट उपलब्ध कराया गया। विद्यालय शिक्षा विभाग हरियाणा के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. महावीर सिंह ने एक अर्ध-सरकारी पत्र लिखकर नामांकन बढ़ाने के संदर्भ में सराहनीय कार्य करने वाले मुखियाओं के कार्य की प्रशंसा की।

क्या लिखा गया प्रशंसा-पत्र में-

विद्यालय शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. महावीर सिंह ने विद्यालय मुखियाओं को भेजे अर्ध सरकारी पत्र में कहा- 'मुझे जानकर बहुत प्रशंसा हुई कि आपके कुशल नेतृत्व में आपके विद्यालय ने नामांकन में उत्कृष्ट बढ़ोतरी की है। कोविड-19 के दौरान अथक प्रयासों से तथा आप द्वारा अभिभावकों से लगातार संपर्क करके इस शैक्षणिक सत्र में नामांकन में वृद्धि की है। यह आपके परिश्रम की पराकाष्ठा एवं कुशल नेतृत्व क्षमता से ही संभव हो पाया है। विभाग आपके इन प्रयासों की सराहना करता है। कोविड-19 महामारी के कारण आपने अनेक विद्यार्थियों को ड्रॉपआउट होने से बचाया है तथा शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़े रखकर उनके उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त किया है। मैं आपके कुशल नेतृत्व तथा आपके समस्त स्टाफ के अथक प्रयासों के लिए बधाई देता हूँ। आशा करता हूँ कि भविष्य में भी आप इन प्रयासों को जारी रखेंगे तथा अपने पड़ोस के अन्य विद्यालयों के लिये अभिप्रेरणा का स्रोत बने रहेंगे।'

क्या रहा चुनाव का मापदंड-

वे प्राथमिक विद्यालय जहाँ छात्र संख्या 50 प्रतिशत

से अधिक (न्यूनतम 40 विद्यार्थी) बढ़ी, वे मिडल विद्यालय जहाँ छात्र संख्या 50 प्रतिशत से अधिक (न्यूनतम 75 विद्यार्थी) बढ़ी, वे उच्च विद्यालय जहाँ छात्र संख्या 40 प्रतिशत से अधिक (न्यूनतम 75 विद्यार्थी) बढ़ी, वे वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जहाँ छात्र संख्या 20 प्रतिशत से अधिक (न्यूनतम 150 छात्र) बढ़ी, तथा वे संस्कृति मॉडल विद्यालय जहाँ छात्र संख्या 50 प्रतिशत से अधिक (न्यूनतम 250 छात्र) बढ़ी।

सुर्खपुर जैसे विद्यालय बने मिसाल-

कई गाँवों में स्थानीय सहयोग से नामांकन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। झज्जर में सुर्खपुर राजकीय माध्यमिक विद्यालय गत वर्ष छात्र संख्या कम होने के कारण बंद होने के कगार पर आ गया था। विद्यार्थियों की कुल संख्या 20 रह गई थी, जिनमें पहली से पाँचवीं कक्षा के 14 तथा छठी से आठवीं कक्षाओं के 6 विद्यार्थी थे। ये विद्यार्थी भी अन्यत्र जाने का विचार करने लगे थे। शिक्षकों व ग्रामवासियों ने इस समस्या को गंभीरता से लेते हुए नामांकन बढ़ाने के प्रयास जारी किए। गाँव में 'जागरूक शिक्षा समिति' का गठन किया गया। जन-सहयोग से विद्यालय में आवश्यक सुविधाएँ मुहैया कराई गईं तथा अभिभावकों को अपने बच्चों को राजकीय विद्यालयों में प्रवेश दिलाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इन सब प्रयासों का सुपरिणाम यह है कि अब विद्यालय की छात्र संख्या लगभग डेढ़ सौ हो गई है। जो मिडल विद्यालय बंद होने के कगार पर था, उसे हाई स्कूल के रूप में स्तरोन्नत के लिए माँग की जाने लगी है।

फरीदाबाद की जिला शिक्षा अधिकारी ऋतु चौधरी ने बताया कि विभाग का यह कदम निश्चित तौर पर बहुत सराहनीय है। इससे उत्कृष्ट कार्य करने वालों का हौसला बढ़ा है। उन्होंने बताया कि उनके जिले में अजरौंदा स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में 37 विद्यालयों के मुखियाओं को सम्मानित किया गया। उपायुक्त जितेंद्र यादव ने प्रशंसा-पत्र प्रदान किए। उन्होंने कहा कि गुरु का व्यक्ति के जीवन में विशेष महत्त्व है। उन्होंने सभी विद्यालय मुखियाओं व शिक्षकों से कहा कि वे अध्यापन-कार्य को एक मिशन समझ कर करें। फरीदाबाद जिले में बीते सत्र में विद्यार्थियों की संख्या करीब 1.08 लाख थी, जो करीब 26 हजार विद्यार्थियों की बढ़ोतरी के साथ अब करीब 1.34 लाख हो गई है। जिले में विद्यार्थियों की संख्या में करीब 24 प्रतिशत की वृद्धि रही, जो प्रदेश में सर्वाधिक है।

पंचकूला के लघु सचिवालय में आयोजित कार्यक्रम में उपायुक्त विनय प्रताप सिंह ने बताया कि अब राजकीय विद्यालयों की विश्वसनीयता दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। लोग निजी विद्यालयों को छोड़ कर राजकीय विद्यालयों में अपने बच्चों को प्रवेश दिला रहे हैं। उन्होंने कहा कि अध्यापकों का व्यवहार और उनकी अध्यापन-शैली बच्चों के भविष्य के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। उपायुक्त ने नामांकन बढ़ाने की दिशा में सराहनीय कार्य करने वाले 9 विद्यालयों के मुखियाओं को प्रशंसा-पत्र प्रदान किए।

झज्जर में शहीद रमेश कुमार राजकीय मॉडल संस्कृति विद्यालय में यह सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिसमें अतिरिक्त उपायुक्त जगनिवास ने विद्यालय मुखियाओं को सम्मान-पत्र प्रदान किए। जिले में सबसे अधिक विद्यार्थियों की संख्या इसी विद्यालय में बढ़ी, जिसमें यह समारोह आयोजित हुआ। पिछले वर्ष विद्यालय में 612 विद्यार्थी थे, जो इस वर्ष बढ़ कर 950 हो गए हैं। अतिरिक्त उपायुक्त ने प्राचार्य जोगेंद्र सिंह के प्रयासों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि जिले में इस वर्ष विद्यार्थियों का नामांकन करीब नौ हजार बढ़ा है, जो सराहनीय है।

हिंदी अध्यापिका
रावमा विद्यालय बुंगा, जिला पंचकूला, हरियाणा

विभाग के प्रयासों से राजकीय विद्यालयों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। छात्र संख्या के मामले में राजकीय विद्यालयों ने निजी विद्यालयों को पछाड़ दिया है। 2019-20 और 2020-21 में निजी विद्यालय राजकीय विद्यालयों से आगे थे। लेकिन राजकीय विद्यालयों में न केवल भौतिक सुविधाओं में सतत सुधार हुए हैं, बल्कि ये गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के केंद्र भी बनते जा रहे हैं। इन्हीं कारणों से आमजन के मन में राजकीय विद्यालयों की विश्वसनीयता बढ़ी है। पिछले दो वर्षों की ही बात करें, तो 4 लाख 40 हजार नये विद्यार्थियों ने राजकीय विद्यालयों में प्रवेश लिया है। मुझे विश्वास है कि भविष्य में यह आंकड़ा और बढ़ेगा।

सम्वर्तक सिंह
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन-1)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

विश्व फोटोग्राफी दिवस पर विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा

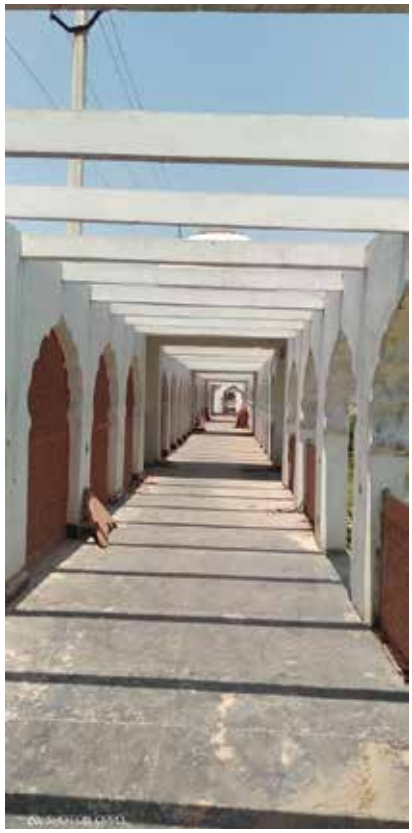

विश्व फोटोग्राफी दिवस के अवसर पर 19 अगस्त को जिला परियोजना अधिकारी, समग्र शिक्षा सुधीर कालड़ा के मार्गदर्शन में जिला अम्बाला के नेशनल स्किल क्वालिटी फ्रेमवर्क के अंतर्गत मीडिया एवं एनिमेशन कौशल से संबधित विद्यालयों रावमावि प्रेमनगर एवं सुल्तानपुर में फोटोग्राफी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में लगभग 50 छात्रों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। छात्रों ने सामाजिक परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए विभिन्न विषयों जैसे प्रकृति, जल संरक्षण, स्वच्छता, पर्यावरण आदि की फोटो खींची एवं अपनी फोटो को सार्थक शीर्षक भी दिए।

इस प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों के अन्तर्निहित कौशल को बाहर लाना एवं उनकी रचनात्मक प्रतिभा को निखारना था। इस प्रतियोगिता के संयोजक, सह परियोजना समन्वयक पूजा शर्मा, उषा शर्मा, रजनी शर्मा, मनिका गुप्ता और सम्बन्धित विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं वोकेशनल अध्यापक सुनील सैनी व मनप्रीत सिंह रहे। रावमावि सुल्तानपुर के अमित (12वीं) ने संध्या के समय एक एकाकी वृक्ष की फोटो का एक सजीव चित्र प्रस्तुत कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय स्थान पर रही मुस्कान (11वीं) एवं तृतीय स्थान प्राप्त गौरव (12वीं) ने अपनी फोटो द्वारा प्रकृति के अनूठे रंगों की परिभाषा दी। रावमावि प्रेमनगर की चेष्टा (12वीं) ने प्रकृति की गोद में पल रही एक नन्ही सी चिड़िया की अनूठी तस्वीर लेकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। विद्यालय की महक (11वीं) ने अपनी फोटो द्वारा स्वच्छता का सन्देश देकर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। तीसरा स्थान प्राप्त करने वाले चिराग (12वीं) ने अपनी फोटो द्वारा प्रकृति एवं जीवों

की पारस्परिक निर्भरता को प्रभावी रूप से दर्शाया। जिला परियोजना समन्वयक, सुधीर कालड़ा के अनुसार विभिन्न कौशलों से सम्बन्धित विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन से छात्रों का बहिर्मुखी विकास संभव है। अतः समय-समय पर हमें इन गतिविधियों का आयोजन करते रहना चाहिए।

-'शिक्षा सारथी' डेस्क

प्रश्न बैंक

प्यारे बच्चो! इस प्रश्न-माला के द्वारा पौष्टिक खानपान पर अपने प्रश्नों के उत्तर देंगे एवं स्वयं मूल्यांकन करके अपना ज्ञान बढ़ायेंगे।

प्र.1 किस केन्द्र शासित प्रदेश में 'थुकपा' मुख्य भोजन है?

क. चण्डीगढ़ ख. दिल्ली
ग. अंडेमान निकोबार घ. लद्दाख

प्र.2 गाजर के हलवे में मुख्य चीज क्या डलती है?

क. गाजर ख.दूध
ग. चीनी घ.उपरोक्त सभी

प्र.3 विटामिन-सी सबसे अधिक किस फल में पाया जाता है?

क.केला ख.नींबू
ग.आँवला घ.आम

प्र.4 फिल्टर कॉफी देश के किस क्षेत्र में सबसे अधिक प्रसिद्ध है?

क.उत्तरी ख.दक्षिणी
ग.पूर्वी घ.पश्चिमी

प्र.5 गुजरात का प्रसिद्ध व्यंजन 'ढोकला' किस प्रकार बनाया जाता है?

क. तलना ख.भाप देना
ग. उबालना घ.भुनना

प्र. 6 रत्नागिरी का कौन-सा फल प्रसिद्ध है?

क आम ख अनानास
ग अमरूद घ केला

प्र.7 'चूरमा'-इस मीठे व्यंजन का उद्गम राज्य कौन सा है?

क.मध्यप्रदेश ख.पंजाब
ग.हिमाचल प्रदेश घ.हरियाणा

प्र. 8 क्रिसमस पर मुख्य व्यंजन कौन-सा बनाया जाता है?

क. पावभाजी ख.केक
ग. सेवइयाँ घ.गाजर का हलवा

प्र.9. 'मसालों की भूमि' के रूप में जाने जाना वाला राज्य कौन-सा है?

क. हरियाणा ख.कर्नाटक
ग.केरल घ.आन्ध्र प्रदेश

उत्तर : 1.घ 2.घ 3.ग 4.ख 5.ख 6.क 7.घ 8.ख 9.ग

- हर्ष कुमार 'गुरु जी'
प्राध्यापक समाज शास्त्र
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बीकानेर
जिला-रेवाड़ी, हरियाणा

खूब उत्साह से मनाया गया 48वाँ वार्षिक विज्ञान-उत्सव

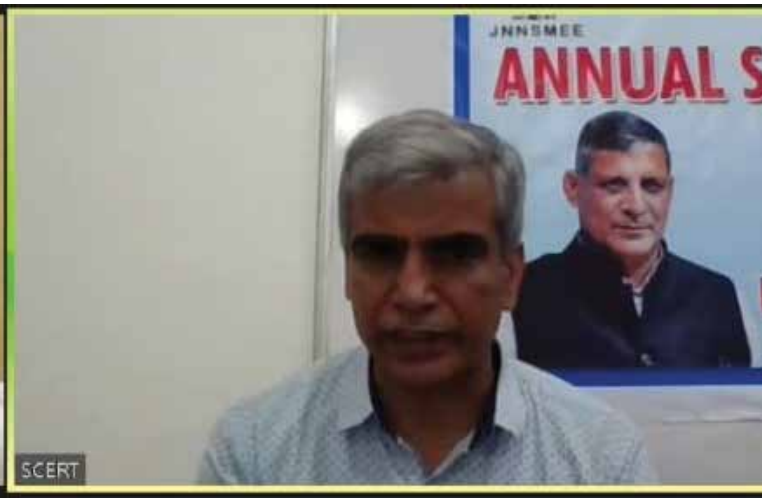

सविता अहलावत

बच्चों, शिक्षकों व सामान्य जनता के बीच विज्ञान व गणित को लोकप्रिय बनाने के लिए प्रतिवर्ष राष्ट्रीय अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् जवाहरलाल नेहरू विज्ञान गणित एवं पर्यावरण प्रदर्शनी का आयोजन करती है। हरियाणा में राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के तत्त्वावधान में प्रतिवर्ष खंड, जिला तथा राज्य स्तर पर जेएनएनएसएमईई का आयोजन किया जाता है।

सत्र 2020-21 में कोविड-19 के चुनौतीपूर्ण समय के दौरान 48वें जेएनएनएसएमईई का खंड, जिला तथा राज्य स्तर पर आयोजन ऑनलाइन माध्यम से जूम ऐप द्वारा किया गया। इस प्रदर्शनी में शिक्षामंत्री कँवरपाल ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। डॉ. जे. गणेशन, निदेशक माध्यमिक शिक्षा हरियाणा ने जूम ऐप पर यू-ट्यूब लिंक के माध्यम से प्रदर्शों का अवलोकन करके प्रदर्शनी की शोभा बढ़ाई।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद के निदेशक डॉ. ऋषि गोयल ने शिक्षा मंत्री जी का स्वागत किया तथा आत्मनिर्भर भारत का सपना साकार करने के लिए बच्चों को प्रेरित किया। स्टेट कॉर्ऑर्डिनेटर सविता अहलावत ने जेएनएनएसएमईई के बारे में विस्तारपूर्वक बताया।

इस प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य बच्चों में वैज्ञानिक सोच पैदा करना ही नहीं था, बल्कि उन्हें वर्चुअल शिक्षण सहायक सामग्री से परिचित करवाना भी था। सत्र 2020-21 में इस प्रदर्शनी की थीम 'प्रौद्योगिकी और खिलौने' यानी 'टेक्नोलॉजी एंड ट्वायस' था।

इसके अन्तर्गत पाँच उपविषय थे- पर्यावरण अनुकूल सामग्री, स्वास्थ्य, स्वास्थ्य रक्षा तथा स्वच्छता, इंटरएक्टिव सॉफ्टवेयर, ऐतिहासिक विकास और गणितीय मॉडलिंग। एक-दिवसीय सेमिनार (विचार गोष्ठी) के लिए विषय था- ''दैनिक जीवन में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का क्रियान्वयन'

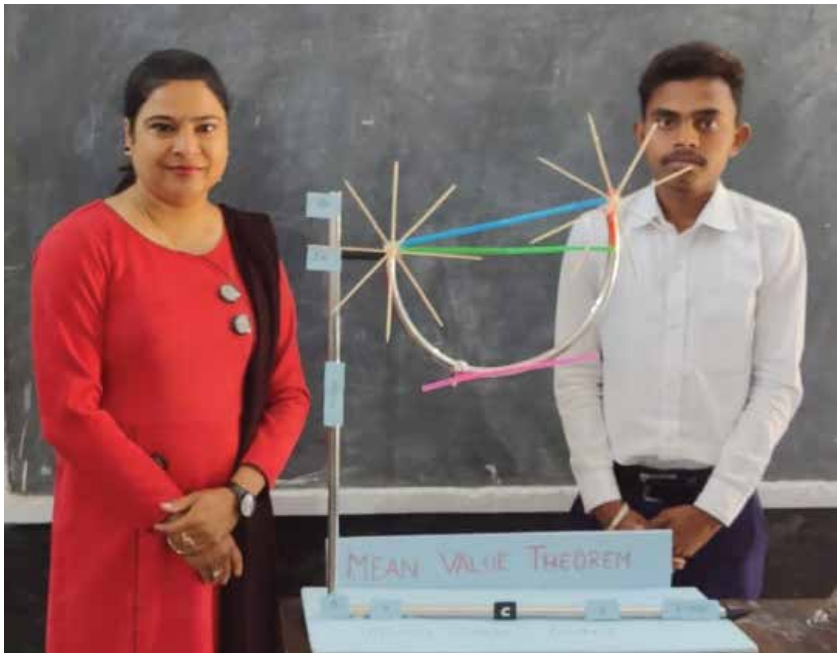

खंड स्तर के विजेता विद्यार्थियों ने जिला स्तर पर तथा जिला स्तर के विजेताओं ने राज्य स्तर पर प्रदर्शनी में ऑनलाइन माध्यम से प्रतिभागिता की। राज्य स्तर पर सभी उपविषयों के प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय विजेता विद्यार्थियों को शिक्षा मंत्री श्री कँवरपाल के कर-कमलों द्वारा ई-सर्टिफिकेट व इनाम की राशि वितरित की गई। जिला स्तर पर 253 विजेता विद्यार्थियों ने राज्य स्तर पर हिस्सा लिया और अब राज्य स्तर के विजेता राष्ट्रीय स्तर पर अपना परचम लहराएँगे। इन सभी विजेता विद्यार्थियों के प्रदर्शों को यू-ट्यूब पर अपलोड कर दिया गया है तथा पूरे प्रदेश के छात्रों ने यू-ट्यूब पर इन प्रदर्शों का अवलोकन किया है।

इस वर्ष एक उल्लेखनीय बात यह रही कि ऑनलाइन मोड होने के कारण दूरदराज के ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों की भागीदारी अधिक रही। छात्रों ने आत्मनिर्भर भारत और डिजिटल इंडिया का सपना विज्ञान प्रदर्शनी के माध्यम से साकार किया।

वर्चुअल मोड के माध्यम से ये देखने को मिला कि सभी प्रतिभागियों ने अपने विचारों को आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत किया। नवाचार और रचनात्मकता पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने के लिए विद्यार्थियों ने बहुत शानदार तरीके से टैक्नोलॉजी का उपयोग किया।

यमुनानगर के विजेता छात्रों को जिला शिक्षा अधिकारी की उपस्थिति में फिजिकल मोड में शिक्षामन्त्री कँवरपाल ने अपने कर-कमलों से पारितोषिक प्रदान किया। शिक्षा मंत्री ने विज्ञान के क्षेत्र

में उन्नति के उदाहरण देते हुए बताया कि विश्वकर्मा विश्वविद्यालय, पलवल के छात्रों के द्वारा एक प्रदर्श बनाया गया जो ऑक्सीजन कंसन्ट्रेट करने के साथ-साथ 250 मीटर तक के क्षेत्रफल की हवा को शुद्ध करने का भी काम करता है।

उपनिदेशक सुनील बजाज ने गणित प्रयोगशाला के बारे में अवगत करवाया। डॉ.दीप्ति बोकन विज्ञान अनुभाग अध्यक्ष ने राज्य स्तरीय जेएनएनएसएमईई तथा इंस्पायर का परिणाम घोषित किया। इंसपायर स्टेट कोऑर्डिनेटर पूनम यादव ने इंस्पायर स्कीम के बारे में विस्तृत जानकारी दी। ऑनलाइन मंच संचालन का कार्य डॉ.योगेश वशिष्ठ, विषय विशेषज्ञ एससीईआरटी ने किया। संयुक्त निदेशक, संगीता यादव, उपनिदेशक रवीन्द्र, एससीईआरटी सदस्य राज्य के सभी जिला शिक्षा अधिकारी भी जूम एप के माध्यम से इस प्रदर्शनी का अहम हिस्सा थे। इस प्रदर्शनी में बायो सीएनजी प्रोडक्शन, मूविंग टेबल, व स्मार्ट जैक आदि प्रदर्श आकर्षण का केन्द्र रहे।

अन्त में उपनिदेशक सुनील बजाज ने शिक्षा मंत्री कँवर पाल, निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्री जे.गणेशन, सभी जिला शिक्षा अधिकारियों, जिला मौलिक शिक्ष अधिकारियों, अध्यापकों व विद्यार्थियों का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि इस प्रदर्शनी के आयोजन को सफल बनाने में सभी जिला शिक्षा अधिकारी, डीएसएस, डीएमएस अध्यापकों व बच्चो की कड़ी मेहनत है।

विषय विशेषज्ञ, एससीईआरटी हरियाणा
गुरुग्राम, हरियाणा

विद्यालय खुलने के बाद भी चलते रहेंगे ई-विद्यालय

ऑफलाइन और ऑनलाइन का एक मिश्रित दृष्टिकोण ही खोलेगा शिक्षा के क्षेत्र में नयी संभावनाओं के द्वार

मनोज कौशिक

जब मार्च -2020 के बाद कोविड-19 हमारे लिए एक कड़वी सच्चाई बन गया, तब इसके परिणामस्वरूप उभरी सदमे की लहरें अप्रत्याशित थीं। हर किसी ने अपने आप को अपने तरीके से सँभाला। अचानक बदली इन परिस्थितियों ने प्रत्येक को बदलने को लगभग बाध्य कर दिया। लेकिन घने काले बादलों में सुनहरी रेखा यह रही कि इस आपदा ने जन-जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में भविष्य की संभावनाओं के रास्ते बनाने का अवसर दिया।

कई अन्य राज्यों की तरह, हरियाणा का शिक्षा-तंत्र भी महामारी से प्रभावित था, क्योंकि स्कूल बंद हो गए थे और छात्रों की शिक्षा स्कूलों से घरों में स्थानांतरित हो गई थी। 2020 में, एससीईआरटी, स्कूल शिक्षा विभाग ने 'घर से पढ़ाओ' अभियान चलाया, जिसने यह सुनिश्चित किया कि सीखने की सामग्री व्हाट्सएप और टेलीविजन चैनलों (एजुसैट) के माध्यम से प्रसारित की गई, जबकि अभ्यास और आकलन, ई-लर्निंग के लिए राज्य द्वारा विकसित एक ऐप- 'अवसर' पर हुआ। प्रथम वर्ष 2020-21 में इसकी पहुँच उल्लेखनीय थी - एजुसैट के माध्यम से 1000 घंटे से अधिक समय के शैक्षिक प्रसारण हुए, 75% छात्रों ने साप्ताहिक क्विज़ में भाग लिया, 90% से अधिक छात्रों ने ऑनलाइन छात्र मूल्यांकन परीक्षा (सैट) का प्रयास किया और लगभग 80% माता-पिता ई-पीटीएम के माध्यम से जुड़े हुए थे।

ऑनलाइन सीखने के एक वर्ष के अनुभवों के आधार पर एससीईआरटी, स्कूल शिक्षा विभाग 2021-22 के लिए एक दूरस्थ शिक्षा अभियान 'ई-विद्यालय' के नाम से प्रारंभ कर दिया गया है। ऑनलाइन शिक्षा का पहला वर्ष छात्रों और शिक्षकों को ई-लर्निंग में शामिल करने और अभ्यस्त बनाने पर केंद्रित था। इस वर्ष 'ई-विद्यालय' एक कदम आगे बढ़कर अब सीखने और जुड़ाव की गुणवत्ता में सुधार पर ध्यान केंद्रित करेगा। ई-विद्यालय की अवधारणा इस बात पर केन्द्रित है कि किस प्रकार से एक स्कूल के सीखने के वातावरण को और अधिक सुगम बनाकर व्यक्तिगत और ऑनलाइन सीखने के बीच की खाई को

पाटा जाये। इसे सुनिश्चित करने के लिए एससीईआरटी में एक राज्य समन्वयक के साथ दस विषय विशेषज्ञों और 49 मूल्यांकन कर्ताओं की एक टीम निरंतर कार्यरत है। इस टीम द्वारा, ई-विद्यालय के तहत, सभी ई-सामग्री को साप्ताहिक विषयवार कैलेंडर के आधार पर वितरित किया जा रहा है। सम्पूर्ण सामग्री एससीईआरटी, हरियाणा द्वारा प्रकाशित अध्यायों और दक्षताओं पर आधारित है तथा एनसीईआरटी के दिशानिर्देशों के अनुरूप है। ई-कंटेंट को दो मुख्य प्लेटफॉर्मः टीवी-आधारित एजुसैट और अवसर ऐप के माध्यम से वितरित किया जा रहा है। अधिकतम पहुँच के लिए व्हाट्सएप समूहों पर दैनिक संदेश भी साझा किए जाते हैं ।

सीखने के बाद, दो गतिविधियों के माध्यम से अभ्यास सुनिश्चित किया जाएगाः एडुसैट / अवसर पर कवर किए गए पाठ्यक्रम पर आधारित दैनिक सर्वेक्षण और साप्ताहिक पाठ्यक्रम पर आधारित मेगा सर्वेक्षण। छात्र को सैट परीक्षाओं के लिए बेहतर ढंग से तैयार करने के लिए 3 सप्ताह में एक बार मेगा सर्वेक्षण किया जाएगा। शिक्षण-इतर गतिविधियों के माध्यम से छात्रों को ऊर्जावान बनाए रखने के लिए, उन्हें 'कलाकृति' कला और शिल्प, संगीत आदि गतिविधियों में संलग्न करना जारी रखा जाएगा। सैट चक्र के अंत में, अवसर ऐप पर ऑनलाइन छात्र मूल्यांकन आयोजित किया जाएगा।

उपरोक्त पहल जहाँ एक ओर छात्रों को सीखने के लिए अभ्यास सामग्री प्रदान करेगी, वहीं दूसरी ओर छात्रों के लिए शिक्षकों के साथ जुड़े रहना भी महत्त्वपूर्ण है। सभी छात्रों तक पहुँचने के लिए, शिक्षकों को गूगल-मीट जैसे प्लेटफार्मों पर लाइव शंका समाधान कक्षाएँ संचालित करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। जो ऐसे प्लेटफार्मों के माध्यम से उपस्थित होने में असमर्थ हैं, शिक्षक उन छात्रों से फोन कॉल या घर के दौरे के माध्यम से जुड़ेंगे। यह छात्र-शिक्षक जुड़ाव को और सुदृढ करेगा।

ई-मेंटरिंग के हरियाणा के मॉडल को ई-विद्यालय के एक मूलभूत स्तंभ के रूप में देखा गया है। ई-विद्यालय में हमारे मेंटर कुछ इस तरह से एक बहुआयामी भूमिका निभाएँगे:

- शिक्षकों को शैक्षणिक सहायता प्रदान करना
- उन्हें नए शिक्षण उपकरणों के अनुकूल बनाने में मदद करना
- छात्र जुड़ाव की गुणवत्ता पर अंतर्दृष्टि साझा करना और कार्य करना
- समुदाय एवं माता-पिता से एक निरंतर प्रतिक्रिया लेने के सहायक रूप में।
- वे जमीन पर राज्य के आँख-कान होंगे और अभियान को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

शिक्षक, मेंटोर्स और अधिकारियों द्वारा ई-विद्यालय शुरू करने की इस प्रक्रिया में, प्रेरणा शक्ति स्पष्ट है। यदि छात्र स्कूल नहीं जा पाता है, तो हम कितने प्रभावशाली तरीके से स्कूल को छात्रों के पास कैसे ला सकते हैं? इस समन्वित बहु-मंच दृष्टिकोण के साथ, सभी छात्रों को सीखने की गुणवत्ता पूर्ण सामग्री प्रदान करने में सक्षम होने की दिशा में निरंतर अग्रसर होना होगा। आने वाले समय में परिस्थितियों में सुधार के लिए हम आशान्वित तो हैं परन्तु पूर्णतया पुरानी व्यवस्था में लौटना शायद कठिन हो, अब ऑफलाइन और ऑनलाइन का एक मिश्रित, एकीकृत एवं संकलित दृष्टिकोण ही हमें भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार कर नयी संभावनाओं के द्वार खोलेगा ।

विषय विशेषज्ञ
एससीईआरटी गुरुग्राम
हरियाणा

डिजिटल शिक्षा, कक्षा में उपस्थित होकर पढ़ाई करने का विकल्प नहीं बन सकती है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि हम उसे (डिजिटल शिक्षा) छोड़ दें। जब बच्चे एटीएम से पैसे निकाल सकते हैं, मोबाइल से प्री-पेड बिल भर सकते हैं, डिजिटल भुगतान कर सकते हैं, तब वे वर्चुअल माध्यम से शिक्षा भी प्राप्त कर सकते हैं। बड़ी संख्या में ऐसे बच्चे हैं जो पारंपरिक तरीके से स्कूली शिक्षा नहीं ले पा रहे हैं। स्कूली शिक्षा विभाग ऐसे बच्चों के लिए डिजिटल या वर्चुअल स्कूल के रूप में नया मंच जा रहा है। अब ओपन स्कूल से भी ऑनलाइन शिक्षा मिल सकेगी। हमें 'मिश्रित शिक्षा' की ओर कदम बढ़ाना होगा।

धर्मेंद्र प्रधान
केंद्रीय शिक्षा, कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्री, भारत सरकार

वैश्विक पटल पर छाई हिंदी

विश्व-भाषा बनने की दिशा में मज़बूती से कदम बढ़ा रही है हिंदी

सुमन लता

वैश्वीकरण के कारण पूरी दुनिया लगातार सिमटती जा रही है। विश्व के वर्तमान परिदृश्य में आर्थिक और सांस्कृतिक दोनों ही दृष्टि से हिंदी की भूमिका भी सुदृढ हुई है। भूमंडलीकरण, मीडिया एवं तकनीक के विकास के कारण हिंदी न केवल भारत बल्कि विश्व की प्रमुख भाषा के रूप में उभरी है। आज जमीन और आसमान की दूरियाँ सिमटती जा रही हैं। तमाम देश एक दूसरे पर निर्भर हो गए हैं। भारत की छवि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मजबूत हो रही है। सूचना एवं संचार क्रांति, तकनीक तथा बाज़ारवाद के वर्तमान युग में आज भारत पूरे विश्व में एक महाशक्ति के रूप में उभर रहा है। भारत की तूती सभी क्षेत्रों में बोल रही है। हिंदी भाषा विश्व भाषा बनने की प्रक्रिया की ओर अग्रसर है।

भाषा भावों, विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। भाषा सर्वव्यापी है। यह हमारे विचार, स्वप्न, वार्तालाप, उपासना, प्रार्थना और संचार सबमें उपस्थित है। भाषा ही किसी देश की सच्ची पहचान, उस देश की सभ्यता-संस्कृति की संवाहिका होती है। किसी भी देश की वैचारिक एवं सामाजिक एकता का आधार भाषा ही तो होती है। बिना भाषा के समाज और देश की कल्पना भी नहीं की जा सकती। भाषा किसी भी राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोती है।

हिंदी हिंदुस्तान में जन-जन की भाषा है। हिंदी हमारे जीवन-मूल्यों, संस्कृति, सभ्यता एवं संस्कार की संवाहिका है। हिंदी भारत का स्वाभिमान है, गरिमा है। भारत के सांस्कृतिक वैभव, राष्ट्रीय गौरव और अस्मिता को बचाने में हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। धर्म, अध्यात्म, दर्शन तथा साहित्य के क्षेत्र में पहले जो कार्य संस्कृत भाषा ने किया, वही कार्य आज हिंदी भाषा भी कर रही है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने भी कहा था- 'अगर हम भारत को एक राष्ट्र बनाना चाहते हैं तो हिंदी ही हमारी राष्ट्रभाषा हो सकती है।'

देश आज़ाद हुआ, संविधान का निर्माण हुआ, 14 सितम्बर, 1949 को देवनागरी लिपि में हिंदी को भारत संघ की राजभाषा बनाया गया। आज़ादी के आंदोलन में हिंदी देश की राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक रही है। नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने कहा था- 'प्रांतीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज से नहीं मिल सकती।' अपनी प्रान्तीय भाषाओं की भरपूर उन्नति कीजिए, उसमें कोई बाधा नहीं डालना चाहता और न ही हम किसी की बाधा को सहन ही कर सकते हैं। पर सारे प्रान्तों की सार्वजनिक भाषा का पद हिंदी या हिंदुस्तानी को ही मिला है।

हिंदी एक उदार भाषा है जो विभिन्न भाषाओं की अच्छाइयों को आत्मसात किए हुए है। हिंदी का विशाल फ़लक देश की विभिन्न बोलियों के शब्दों को आत्मसात कर रहा है, विदेशी भाषाओं के शब्द भी इसमें समाहित होते जा रहे हैं। हिंदी के कई रूप देश की अनेक बोलियों में बिखरे पड़े हैं। हम हिंदी को इन बोलियों से अलग करके नहीं देख सकते। देश की एकता-अखंडता और हिंदी की समृद्धि के लिए यह अच्छा भी है। विश्व-कवि नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर बंगाली थे, किंतु वे भी हिंदी को राष्ट्रभाषा के पद पर देखना चाहते थे। टैगोर ने कहा था, भारतीय भाषाएँ नदियाँ हैं, जबकि हिंदी महानदी है। हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में विरोध इसलिए नहीं है, क्योंकि सभी भारतीय भाषाओं का साहित्य अध्यात्ममूलक है। सभी में रामकथा है, सन्त की महिमा है व भौतिक तथा अध्यात्म का समन्वय है। महात्मा गाँधी जी का भी कहना है, जिस भाषा में तुलसीदास जैसे कवि ने कविता की हो, वह अत्यंत ही पवित्र है और उसके सामने कोई भाषा ठहर ही नहीं सकती।

अनेक विदेशी राजनेताओं और विद्वानों ने भी हिंदी को विश्व की एक श्रेष्ठ भाषा बताया है। विद्वान जॉन ग्रिलक्राइस्ट के अनुसार मानव के मस्तिष्क से निकली हुई वर्णमाला में देवनागरी सर्वाधिक पूर्ण वर्णमाला है। हिंदी के प्रकांड विद्वान और अंग्रेजी हिंदी कोष के रचयिता फादर कामिल बुल्के ने लिखा है, विश्व में कोई भी भाषा ऐसी नहीं है जो सरलता और अभिव्यक्ति की क्षमता में हिंदी की बराबरी कर सके। इसकी लिखाई और उच्चारण में आश्चर्यजनक अनुरूपता है। अंग्रेज विद्वान टॉमस ने लिखा है, मैं कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक या बंग से सिंध के मुहाने तक इस विश्वास के साथ यात्रा करने की हिम्मत कर सकता हूँ कि मुझे हर जगह ऐसे लोग मिल जाएँगे, जो हिंदी बोल लेते होंगे।

हिंदी का विशाल साहित्य एवं शब्द-भंडार अत्यंत विस्तृत है, व्याकरण सरल तथा तर्कसंगत है। इसकी लिपि देवनागरी अत्यंत सुगम, बोधगम्य एवं कलात्मक है। हिंदी पूरी तरह से ध्वनि और उच्चारण आधारित भाषा है, जिसमें लगभग सभी ध्वनियों को अभिव्यक्त करने व

सम्प्रेषित करने की क्षमता है।

वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में हिंदी वैश्विक स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है। हिंदी अब केवल हिन्द की ही भाषा नहीं रही अपितु सुदूर फिजी से लेकर सूरीनाम, मॉरिशस, गुयाना, नेपाल आदि देशों में भी हिंदी बोली जाती है। हिंदी भाषी देशों के अलावा अमेरिका, दक्षिण अमेरिका, न्यूज़ीलैंड, जर्मनी, कनाडा आदि देशों में प्रवासी भारतीयों के कारण हिंदी अपना परचम लहरा रही है। दुनिया में हिंदी की महत्ता दिनोंदिन बढ़ रही है, इसका खुमार वैश्विक स्तर पर सर चढ़कर बोल रहा है। देवनागरी लिपि के कारण इसे इंटरनेट, सूचना प्रौद्योगिकी तथा जनसंचार के क्षेत्र में व्यापक लोकप्रियता मिली है।

हिंदी को विश्वव्यापी बनाने में मीडिया, टेलीविजन, सिनेमा, सोशल मीडिया आदि के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता। फिल्में, चित्रपट, छोटा परदा, हिंदी गीत इसके प्रचार-प्रसार का माध्यम बन रहे हैं तथा हिंदी को आमजन और विश्व की भाषा बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं। दूरदराज मेघालय के चेरापूँजी में टैक्सी चालक हिंदी गाने बड़े चाव से गाता है तो सुदूर तमिलनाडु का मछुआरा बड़े शौक से हिंदी गाने सुनता है। यह और बात है कि दोनों ठीक से हिंदी बोल नहीं पाते, परन्तु दोनों ही हिंदी गानों का आनन्द उठाते हैं।

हिंदी अब रोज़गार एवं तकनीक की भाषा बन चुकी है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अपना व्यापार बढ़ाने के लिए हिंदी को बेहिचक अपनाती जा रही हैं। व्यवसाय की दृष्टि से देखें तो विश्व में हिंदी बोलने वाले सर्वाधिक लोग हैं, जो एक बहुत बड़ा बाज़ार उपलब्ध करवाते हैं। विश्व को बाज़ारवाद के दबाव के चलते कारोबार, खेल, विज्ञान आदि से जुड़ी जानकारियों को हिंदी में परोसने पर विवश होना पड़ा है। माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, याहू जैसी अनेक विश्व स्तरीय कम्पनियाँ व्यापक बाज़ार पर भारी मुनाफे को देखते हुए हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दे रही हैं। वैश्विक स्तर पर भारत की बढ़ती साख ने हिंदी जानने समझने के लिए विवश कर दिया है।

वर्तमान समय में हिंदी सुदृढ़ होकर उभर रही है। हिंदी अपने व्यावहारिक गुण, वैज्ञानिक लिपि, समृद्ध साहित्य के कारण अपने विकास के लिए अपार सम्भावनाएँ खोज सकती है। हिंदी अपनी आंतरिक शक्ति के बल पर निरंतर आगे बढ़ती जा रही है।

अंग्रेजी लोग सीखते रहेंगे, परन्तु हिंदी विश्व में नए आयाम स्थापित करती रहेगी। हिंदी में वैश्विक भाषा बनने की क्षमता है। जैसे-जैसे प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी, हिंदी का वर्चस्व बढ़ेगा।

गणित अध्यापिका
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
गढ़ी उजाले खाँ
खण्ड-गोहना, सोनीपत, हरियाणा

हिन्दी मेरा देवालय है

हिन्दी मेरा परिचय है
हिन्दी मेरा शब्दालय है।
मुझको रखती चैतन्य
हिन्दी गंगा-हिमालय है।

हिन्दी मेरा विद्यालय है
हिन्दी मेरा पुस्तकालय है।
पारस मोती जैसे शब्द
हिन्दी मेरा देवालय है।।

हिन्दी में ही माँ बोला है
हिन्दी बचपन का झूला है।
जीवन का ऊर्जावान दीप
हिन्दी ही काशी-मथुरा है।।

हिन्दी का हर शब्द प्यारा है
हिन्दी का इतिहास न्यारा है।
संत कबीर की अमृतवाणी
हिन्दी भाषा अमृतधारा है।।

हिन्दी भाईचारे की भाषा है
हिन्दी सबकी अभिलाषा है।
रसखान, रहीम की साधना
हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है।।

गोपाल कौशल भोजवाल
नागदा, जिला- धार, मध्यप्रदेश

नवीन प्रतिमान गढ़ता अम्बाला का जनसूई विद्यालय

दृढ़ इच्छाशक्ति एवं काबिलियत के दम पर जनसूई स्कूल के स्टाफ ने खुद के खर्च से विद्यालय की सूरत पूरी तरह बदल दी। स्कूल की दशा सँवारने व पढ़ाई के लिए बेहतर माहौल बनाने की मिसाल स्कूल में अंग्रेजी की अध्यापिका मीनू सभरवाल बनीं। स्कूल में सुविधाएं स्थापित करने की शुरूआत उन्होंने निजी खर्च से शुरू की। धीरे-धीरे हालात सुधरे तो स्कूल स्टाफ व ग्रामीणों ने भी इस काम में मदद के लिए हाथ आगे बढ़ाए, जिसका सुखद परिणाम ये रहा कि दो वर्ष पहले तक जिस स्कूल की पहचान टूटी दीवारों, उखड़े प्लास्टर, गढ्ढे व टूटे फर्श से थी, अब उसी स्कूल की पहचान चमचमाते फर्श, दीवारों पर शानदार पेंटिंग, हरे-भरे बगीचे, आधुनिक लाइब्रेरी व ढेर सारे बच्चों से है। स्कूल के शौचालय में लगी टाइलें, वॉशबेसिन व पानी की व्यवस्था किसी भी होटल से कम नहीं है। बच्चों के लिए पढ़ने का माहौल भी पहले से कहीं बेहतर हुआ है। बेहतर व्यवस्था व अच्छे माहौल को देखते हुए ग्रामीणों ने भी अपने बच्चों को इस स्कूल में पढ़ाने की रुचि दिखाई।

दरअसल, सन् 1948 में शुरू हुए जनसूई के हालात कभी ज्यादा अच्छे नहीं रहे। स्कूल में अव्यवस्थाओं की तो भरमार रही, साथ ही लंबे समय तक स्कूल स्टाफ सदस्यों के बीच भी आपसी तालमेल कुछ खास बेहतर नहीं रहा। सितम्बर 2017 में प्रिंसिपल जय भगवान का यहाँ स्थानांतरण हुआ। उन्होंने इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए एक बदलाव की शुरूआत की और स्कूल को नई दिशा देने का प्रयास किया ताकि विद्यार्थियों का भविष्य उज्ज्वल हो सके। वहीं, स्कूल की हालत सुधार कर सुंदर बनाने की दिशा में काम करने के साथ वे स्कूल स्टाफ सदस्यों व ग्रामीणों को भी साथ लेकर चले। समय-समय पर सरकारी ग्रांट भी आई जिससे मरम्मत के काम तो होते रहे, लेकिन स्कूल सुविधाएँ स्थापित करने के लिए ये ग्रांट नाकाफी थी। इसी बीच 4 अक्तूबर 2019 को स्कूल प्रिंसिपल जयभगवान का सड़क दुर्घटना में निधन हो गया। इसके बाद डीडी पावर अंग्रेजी प्राध्यापिका मीनू सभरवाल को मिली। इस दौरान कोरोना महामारी ने दस्तक दी। कोरोना स्कूल के सुधार में बड़ी अड़चन बनकर आया। स्कूल में काम शुरू न हो पाने के कारण ग्रांट वापिस चली गई। विद्यालय की दशा सुधारने की शुरूआत उन्होंने अपनी जेब से दो लाख रुपये खर्च करके की। बाद में स्कूल स्टॉफ व ग्रामीणों ने जब मैडम मीनू का जज्बा देखा तो प्रभावित होकर उन्होंने भी इसमें सहयोग करना शुरू दिया।

खुद मुँह से बोल रहा स्कूल में किया गया सुधार-

स्कूल के सुधार को लेकर किए गए काम की आज हर कोई तारीफ कर रहा है। ग्रामीण कहते हैं कि वह मैडम को यहाँ से ट्रांसफर होकर कहीं ओर नहीं जाने देंगे तो दूसरी ओर, डीपीसी सुधीर कालड़ा ने स्कूल का

निरीक्षण किया तो वे भी मैडम मीनू द्वारा किए गए कार्य की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सके। डीपीसी सुधीर कालड़ा ने बताया कि मैडम को इस कार्य के लिए जिला शिक्षा विभाग द्वारा प्रशंसा-पत्र देकर सम्मानित भी किया गया है। स्कूल के जिस मैदान में गड्ढे व अक्सर जहरीले जीवों के निकलने का डर बना रहता था वहाँ अब तक ग्रामीणों व स्टाफ़ की मदद से करीब 600 ट्राली मिट्टी की भरत डालकर उसे समतल कर घास लगाई गई है। इतना ही नहीं, मैदान में एक शानदार पार्क बनाया गया है। स्कूल में अलग-अलग जगहों पर पौधे रोपे गए हैं। जिनकी देखभाल के लिए स्कूल स्टॉफ ने खुद के खर्च पर एक माली रखा है। मॉर्निंग एसेम्बली ग्राउंड के बीचोंबीच माँ सरस्वती की प्रतिमा स्थापित की गई है। स्कूल गेट के साथ व अन्दर की दीवारों पर पेंटिंग व बच्चों के लिए प्रेरणादायक देशभक्ति के स्लोगन व चित्र बनाए गए हैं। स्कूल में आधुनिक लाइब्रेरी राउंड टेबल के साथ कुर्सियाँ, दीवारों पर पीवीसी शीट्स व फर्श पर टाइलस लगाई गई हैं। स्कूल में मिड-डे-मील रसोई के साथ बच्चों की सहूलियत के लिए भोजन कक्ष का निर्माण कार्य जारी है। स्कूल के शौचालय किसी भी शानदार होटल के शौचालयों से कम नहीं हैं।

स्कूल स्टाफ हर समय सहयोग के लिए रहता है तैयार-

स्कूल में व्यवस्था सुधार व सौंदर्यीकरण के लिए मैडम मीनू अब तक करीब 10 लाख रुपये अपनी जेब से खर्च कर चुकी हैं। मैथ टीचर नरेन्द्र सैनी ने 21 हजार, साइंस टीचर मनजीत कौर ने 21 हजार, बलविन्द्र कौर

विद्यालय की डीडीओ मीनू सभरवाल और स्टाफ़ ने सूझबूझ, आपसी सहयोग और ग्रामीणों के सहयोग से एक जर्जर और पिछड़े स्कूल को आधुनिक और आदर्श स्कूल के रूप में परिवर्तित कर दिया है। ज़िले के अन्य स्कूल मुखिया भी इस स्कूल के हो रहे विकास से प्रेरणा ले सकते हैं।

सुधीर कालड़ा, डीपीसी, समग्र शिक्षा, अंबाला

बच्चों को पढ़ाना तो एक शिक्षक का कर्म होता ही है। मन में था कि जहाँ सारा दिन कार्य करना है वहाँ बच्चों की सुविधा के लिए कुछ और भी किया जाए। शुरुआत खुद से की और अच्छे लोग जुड़ते चले गए। शिक्षा विभाग से डीपीसी सर व अन्य अधिकारियों का भी सहयोग एवं मार्गदर्शन मिला और कुल मिलाकर परिणाम सुखद रहा। प्रयास रहेगा कि स्कूल विकास की यह गाथा रुके नहीं।

मीनू सभरवाल, डीडीओ, रावमावि जनसुई, अंबाला

ने 11 हजार, रामदेश शुक्ला ने 11 हजार रुपये खर्च किए हैं। स्टाफ सदस्य रुचि, शिवानी, निशा, गीता व अन्य भी अपने अपने ढंग से स्कूल में कभी पंखे तो कभी रंग पेंट के लिए खर्च करते रहते हैं। माली का वेतन भी स्कूल स्टाफ खुद की जेब से वहन करता है।

ग्रामीणों ने भी किया सहयोग-

बताया जाता है कि सुधार के इस काम में ग्रामीणों ने भी खूब सहयोग किया। कै. गज्जन सिंह, पूर्व सरपंच जागीर सिंह, महेन्द्र सिंह, रवैल सिंह, पूर्व सरपंच वजीर सिंह, गाँव गौरसियाँ से पूर्व सरपंच प्रीतम सिंह, यादवेन्द्र, नैब सिंह, सतनाम जनसुआ, जोगा सिंह मोलगढ़, निशान सिंह, कै. वजीर, कुलविन्द्र सिंह, दिलबाग गुरमीत सिंह आदि ने करीब 8 लाख रुपये का सहयोग किया। ब्लॉक विकास समिति चैयरपर्सन रीना के प्रतिनिधि सोमनाथ के प्रयास से मॉर्निंग असेंबली ग्राउंड में इंटरलॉकिंग टाइल का काम करवाया गया। जेठूराम, रमेश, गोल्डी व सुरेन्द्र गुलाटी ने भी काफी योगदान दिया है। वहीं, स्कूल की नींव रखने वाले मा. पं. हेमराज के परिवार सदस्य कै. एस.पी.शर्मा, डॉ.प्रेमलता, पुष्पराज व कमल शर्मा ने भी पिता की याद में स्कूल में 9 लाख रुपये का योगदान दिया है। स्कूल की जर्जर हालत के कारण जिस स्कूल की तरफ कोई देखता भी नहीं था आज उसी स्कूल को एक प्राध्यापिका की पहल व सामूहिक प्रयासों ने चार चाँद लगा दिए और यह स्कूल न केवल जिला के बल्कि पूरे देश-प्रदेश के स्कूलों के लिए उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है।

मुकेश
लेखक व पत्रकार
अंबाला शहर

अध्यापिका रीटा के लिए शिक्षण पेशा नहीं, इबादत है

निष्ठा, ईमानदारी और लगन से किया हुआ काम हमेशा अपनी अलग पहचान बनाता है। जब यही काम एक अध्यापक के माध्यम से हो तो इसका प्रभाव विद्यार्थियों के साथ-साथ समाज पर भी दिखाई देता है।

बात कर रहे हैं फतेहाबाद जिले के राजकीय प्राथमिक मॉडल संस्कृति पाठशाला, झलनियाँ की अध्यापिका रीटा रानी की, जिन्होंने अध्यापन कार्य को पेशे नहीं बल्कि जुनून की तरह अपनाया है। इसी जुनून के तहत वे कार्य करती गईं जिससे शिक्षा व समाज को नई रोशनी प्रदान हुई। अपने इसी जुनून में उन्होंने एक बार कोई काम प्रारम्भ कर दिया तो फिर पीछे कदम नहीं बढ़ाए।

मैं लम्बे समय से अध्यापन से जुड़ा हुआ हूँ, अनेक मेहनती अध्यापक देखे हैं, लेकिन पिछले तीन सालों में मैंने जिस तरह मैडम रीटा की कार्यशैली को देखा है, इनका कोई सानी नहीं। गरीब बच्चों, वंचित बच्चों, कमजोर बच्चों पर वह विशेष मेहनत करती दिखाई देती हैं। ऐसे बच्चों को विशेष प्रयास द्वारा मुख्यधारा में शामिल करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहती हैं। अपने विद्यालय के बच्चों के साथ वे इस कदर घुलमिल जाती हैं कि शिक्षा के प्रति उदासीन बच्चे भी हर रोज़ विद्यालय जाने की जिद करने लगते हैं। उनके कार्य से अभिभावक भी अत्यन्त प्रसन्न व संतुष्ट नजर आते हैं। बच्चों के नाखून काटना, उनकी स्वच्छता का ध्यान रखना, लड़कियों को गुड और बैड टच के बारे में समझाना आदि कार्य उनकी दिनचर्या में शामिल हैं। प्राथमिक स्कूल में सफाई कर्मचारी न होने के कारण बच्चों की टॉयलेट व उल्टी को स्वयं साफ करने में उन्हें कभी घिन नहीं आती। गरीब बच्चों की आर्थिक सहायता करना, बच्चे के जन्मदिन पर भेंट करना इनके मोटिवेशनल कार्यों में आता है। पर्यावरण से भी मैडम को बहुत लगाव रहता है। समय-समय पर वृक्षारोपण के साथ-साथ इन्होंने स्कूल प्राँगण में अपने खर्च पर पौधों को लगाकर स्कूल की बागवानी को निखारा है और इसके साथ-साथ चौकीदार व चपरासी को पौधों की देखभाल के लिए प्रेरित करती रहती है। इन्होंने अपनी तरफ से स्कूल को घास काटने वाली मशीन भेंट देकर स्कूल बागवानी की स्वच्छता को चार चाँद लगाये हैं। समाज सेवा में भी ये पीछे नहीं हैं। एक बुजुर्ग महिला की 2014 से हर महीने आर्थिक सहायता कर रही हैं जिसका एक बेटा दिव्यांग है। 2015 में अपना मकान बनाने से पहले एक विधवा को एक कमरा बनवाने में आर्थिक सहायता की। 2014 से गौशाला को नियमित रूप से मासिक दान भेज रही हैं। 2016 से एक बेरोज़गार महिला को उसके घर पर स्कूल की पढ़ाई छोड़ चुकी बड़ी लड़कियों को पढ़ाने के काम पर लगाया हुआ है। अपने पिछले स्कूल में इन्होंने इन्वर्टर व बैटरी भेंट कर स्कूल में आ रही गर्मी की समस्या से राहत पहुँचाई। 2015 में इन्होंने अपनी तरफ से प्राइमरी के सारे बच्चों को स्वैटर भी भेंट किये।

लॉकडाउन के दौरान जब हम अपने घरों में बैठे हुऐ थे, तब मैडम का एक नया रूप सामने आया। उन्होंने व्हाट्सएप ग्रुप द्वारा शिक्षण-कार्य जारी रखा। उन्होंने 'रीटा भारत' नाम से एक यू-टयूब चैनल शुरू किया जिसके माध्यम से उनका शिक्षण कार्य निर्विघ्न चलता रहा। आपदाकाल में इनके इस प्रयास के काफी सराहना हुई। फिर शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार शिक्षा-मित्र बनाये और उन्हें अपनी तरफ से स्मार्ट फोन देकर गाँव के बच्चों की शिक्षा जारी रखने के प्रयास किये।

अपने शैक्षणिक व सामाजिक कार्यों के लिए इन्हें कई संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। नवम्बर 2020 में जिला शिक्षा विभाग द्वारा ऑनलाइन पढ़ाई के उत्लेखनीय कार्य के लिए इन्हें चैंपियन सर्टिफिकेट प्रदान किया गया। गणतन्त्र दिवस 2021 के अवसर पर जिला प्रशासन द्वारा उनके सराहनीय कार्यों के लिए सम्मानित किया गया। फरवरी 2021 में अरविंदो सोसायटी की तरफ से इन्हें प्रशंसा-पत्र दिया गया। 8 मार्च, 2021 को अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस पर जननायक विद्यापीठ एवं वीमैन डेडिकेशन मैगजीन द्वारा आयोजित तेजस्विनी संगम कार्यक्रम में इन्हें पर्वतारोही अनीता कुंडु ने 'इनोवेटिव टीचर ऑफ द इयर' पुरस्कार प्रदान किया। इस तरह इन्होंने जो कार्य शिक्षा विभाग व समाज के लिए किये हैं, वे हमेशा अन्य शिक्षकों के लिए प्रेरणा-स्रोत बने रहेंगे।

डॉ. कुलविन्द्र सिंह
प्रवक्ता पंजाबी
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
झलनियाँ, जिला-फतेहाबाद, हरियाणा

चित्रकारी में दक्ष पारूल व प्रेम राज

क्राफ्ट-वर्क में रुचि रखने वाली बाल चित्रकार पारूल ज्यादातर प्रकृति से जुड़े चित्र बनाती है। प्रकृति के खूबसूरत नजारे इसे भाते हैं तथा उन दिव्य दृश्यों को ये पेंटिंग का रूप प्रदान करने का सार्थक प्रयास करती है। पारूल कई तरह के रंगों का प्रयोग आसानी से कर लेती है। बड़ा अधिकारी बनने के साथ-साथ पेंटिंग क्षेत्र में भी नाम कमाना चाहती है।

इसी स्कूल का आठवीं कक्षा का छात्र प्रेम राज की उम्र में बेशक कम हो, किन्तु इसके हाथों में जादुई करिश्मा है। इसकी सोच व कार्य दोनों बड़े कलाकारों जैसा है। ये शीट, कैनवास या अन्य माध्यम पर बड़ी आसानी से पेंटिंग बना लेता है। प्रेमराज प्रकृति के अद्भुत नजारों के साथ समाज में फैली बुराइयों पर पेंटिंग बनाता है। समाज में फैली कुप्रथाओं के खिलाफ रंगों के माध्यम से अपनी आवाज़ बुलन्द करता है। ये इस बाल कलाकार की कला दक्षता व गहरी सोच का ही परिणाम है कि पिछले दिनों

हरियाणा के राजकीय विद्यालयों में प्रतिभा की कोई कभी नहीं है। इन विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थी जहाँ पढ़ाई में सबसे आगे रहते है वहीं अन्य विधाओं में भी चमत्कारिक ढंग से अग्रणी रहते हैं। ये विद्यार्थी हर क्षेत्र में बुलन्दियों को छू रहे हैं। खेल, एडवेंचर, नृत्य, गायन, रंगमंच हो, चित्रकारी हो या अन्य सांस्कृतिक कलात्मक गतिविधियाँ हों। पेंटिंग विधा की अगर हम बात करें तो ये एक ऐसी कला है जो रुचिकर, सुन्दर तथा मनोरंजन करने वाली है। करीब सभी राजकीय विद्यालयों में एक से अधिक ऐसे चित्रकार मिल जाएँगे जो अपनी चित्रकारी से सबका मन मोह लेते हैं। इनमें भी कुछ ऐसे बाल कलाकार हैं जो अपनी चित्रकारी से अचम्भित कर देते हैं। राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय उकलाना मंडी की कक्षा नौवीं में पढ़ने वाली छात्रा पारूल वर्मा तथा आठवीं कक्षा का प्रेम राज चित्रकला में दक्ष है। पारूल वर्मा का कहना है कि उसने अपने दादा सूबे सिंह से बहुत कुछ सीखा है जो पेंटर थे। उनका अनुसरण करके पेंटिंग बनानी सीखी। वर्तमान विद्यालय के शिक्षक राजेन्द्र भट्ट से भी बहुत कुछ सीखा। राजेन्द्र भट्ट खुद एक दक्ष कलाकार हैं। स्केटिंग, डांस, घुमक्कड़ी, पेंटिंग तथा इसने तेलगांना विषय पर पेंटिंग प्रतियोगिता में राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार जीत लिया। इसने अपनी भावनाओं व विचारों के समन्वय से तूलिका व रंगों के माध्यम से जो कलाकृति बनाई, वह हमें बहुत कुछ कहती है। गहरा व बड़ा संदेश देने वाली कृति अन्य बाल कलाकारों के लिए प्रेरणा का काम कर सकती है।

डॉ. ओमप्रकाश कादयान
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
एमपी रोही
जिला-फतेहाबाद, हरियाणा

जय जल-शक्ति अभियान

जय जल-शक्ति अभियान, जल-शक्ति अभियान।
जल से जीवन, जल से सावन, जल जीवन की आन।।

गाँव-शहर अब, चले लहर कब, हमें बचाना पानी।
बिन पानी सब सून बताया, रहिमन कही कहानी।
कहें सदा ज्ञानी-विज्ञानी देना होगा ध्यान।
जय जल-शक्ति अभियान, जल-शक्ति अभियान।।

पंच-तत्त्व का हिस्सा जल है, आओ फर्ज़ निभाएँ।
बूँद-बूँद है बड़ी कीमती, आओ इसे बचाएँ।
जन-जन को मिलकर समझाएँ, रक्खें जल का मान।
जय जल-शक्ति अभियान, जल शक्ति अभियान।।

बहुत ज़रूरी जल-संरक्षण, मिल कर सब अपनाएँ।
जल होगा तो ही कल होगा, जल को सभी बचाएँ।
बरखा बूँदें व्यर्थ न जाएँ, करना ठीक निदान।
जय जल-शक्ति अभियान, जल शक्ति अभियान।।

नए दौर में आओ लिक्खें, मिलकर नई कहानी।
कल की छोड़ो आज अभी से,चलो बचाएँ पानी।
कह नाहड़िया सुर में गाएँ, जल संरक्षण तान।
जय जल-शक्ति अभियान, जल शक्ति अभियान।।

सत्यवीर नाहड़िया
प्राध्यापक रसायनशास्त्र
राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
खोरी, जिला-रेवाड़ी, हरियाणा

लाडली जन्मोत्सव की उड़ान सरकारी स्कूलों से निकलकर विदेशों तक पहुँची

लाख गुलाब लगा लो तुम अपने आँगन में,
जीवन में खुशबू तो बेटी के आने से ही होगी

बेटियाँ लगा रही हैं अब उम्मीद की उड़ानों को पंख। बेटियाँ बोझ नहीं हैं, बल्कि बोझ उठाकर (वेटलिफ्टिंग) ओलंपिक में भी मेडल जीतकर देश की झोली में डाल रही है, देश के लिए इतिहास रच रही हैं, परंतु दुर्भाग्य की बात यह है कि कानून बनने के बाद भी बेटियों को कोख में ही मारा जा रहा है। बेटियों को बचाने के लिए हमारे माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी को भी आगे आना पड़ा और पानीपत की ऐतिहासिक धरा से 22 जनवरी, 2015 को बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान की शुरुआत की ताकि कन्या भ्रूण हत्या को रोका जा सके और बेटियों को बचाया जा सके। उनको मान सम्मान दिया जा सके और कुछ ऐसा ही प्रयास पानीपत जिले से दो प्राथमिक शिक्षकों बोधराज, राजकीय प्राथमिक पाठशाला वार्ड 10 पानीपत व दिनेश कुमार वर्मा, राजकीय प्राथमिक पाठशाला उग्राखेड़ी (वर्तमान में बड़वासनी, सोनीपत) ने किया। शिक्षा विभाग हरियाणा सरकार द्वारा सरकारी स्कूलों में प्रतिवर्ष 8 सितंबर को स्कूलों में मनाए जाने वाले बेटियों के जन्मदिन को देखकर उन्होंने सोचा कि क्यों न इसे एक मुहिम का रूप दिया जाए। इसके लिए अभियान नवोदय क्रांति परिवार (भारत) के सहयोग से नवंबर 2018 में राजकीय प्राथमिक पाठशाला उग्राखेड़ी (पानीपत) से एक कार्यक्रम शुरू किया गया, जिसका नाम रखा गया लाडली जन्मोत्सव, यानी उन बेटियों का जन्मदिन सामूहिक रूप से मनाया जाएगा, जिनके घरों में भी संभवतः उनका जन्मदिन नहीं मनाया जाता। इसके बाद राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर 24 जनवरी, 2019 को राजकीय प्राथमिक पाठशाला वार्ड 10 के प्रांगण में बेटियों का जन्मदिन स्थानीय कलाकारों व अभिभावकों के साथ मनाया गया। जिसमें निगम पार्षद कोमल सैनी जी को इस अभियान की ब्रांड एंबेसडर घोषित किया गया। 8 जनवरी, 2021 को राजकीय प्राथमिक पाठशाला नांगलखेड़ी के प्राँगण में इस वर्ष के पहले लाडली जन्मोत्सव में बतौर मुख्यातिथि ज़िला बाल कल्याण अधिकारी पानीपत रितु राठी ने तो इस अभियान से प्रेरित होकर भविष्य में सामूहिक रूप से बेटियों का जन्मदिन मनाने का वादा कर दिया। इस तरह से साल दर साल ये अभियान पल्लवित, पुष्पित, विकसित होता हुआ कब सरकारी स्कूलों की चारदीवारी से विदेशों में उड़ान भर गया पता ही नहीं चला और कोरोना महामारी में भी हमारे माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के संदेश से आपदा में अवसर को बदलते हुए इस अभियान को भी ऑनलाइन मनाया गया। जिसका संयोजन दोनों शिक्षकों ने किया। क्योंकि कोरोनाकाल में स्कूलों के बंद होने के कारण हर तिमाही बेटियों के साथ मनाना संभव नहीं हो पा रहा था। इसके लिए 11 से 17 जुलाई 2021 तक एक मुहिम शुरू की गई- सेल्फी विद लाडली यानी कि बेटी के साथ सेल्फी अभियान, जिसमें न केवल देश के विभिन्न हिस्सों से लोगों ने बेटियों के साथ सेल्फियाँ भेजीं बल्कि विदेशों न्यूयॉर्क, पीटर्सबर्ग, साऊथ अफ्रीका, किंग्समीड में रह रहे भारतीयों ने भी इसमें सेल्फियाँ भेजकर इस अभियान को अपना स्नेह दिया। जिससे इस अभियान की महक देश के साथ-साथ विदेश में भी महकने लगी। इस सब के साथ-साथ पानीपत की मेयर अवनीत कौर (जिनको मेयर बनने के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी आमंत्रित किया था) ने 24 जनवरी, 2021 को राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर लाडली जन्मोत्सव में बतौर मुख्यातिथि आकर बेटियों को आशीर्वाद देकर इस अभियान को बहुत सराहा और कहा कि इस प्रकार के अभियान समाज मे न केवल बदलाव लाते हैं बल्कि लोगों की सोच को भी बदलते हैं। बेटियों और बेटों में अंतर को कम करने में मदद मिलती है। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिठाना के प्रांगण में आयोजित लाडली जन्मोत्सव में बतौर मुख्यातिथि पधारे पानीपत के जिला शिक्षा अधिकारी रमेश कुमार तो इस मुहिम के बारे में कहते हैं कि लाडली जन्मोत्सव एक सकारात्मक पहल है जो बेटियों को समाज में पहचान दिलाने का कार्य कर रही है।

इस अभियान के संयोजक शिक्षक बोधराज व दिनेश कुमार वर्मा बताते हैं कि हमें भी खुद नहीं पता था कि यह मुहिम पानीपत के सरकारी स्कूल से निकलकर विदेशों तक पहुँच जाएगी। वे कहते हैं कि इस मुहिम की सार्थकता तभी होगी जब सभी स्कूलों में इस लाडली जन्मोत्सव को एक पर्व की तरह से मनाया जाएगा। ये तभी संभव हो पायेगा जब हम सब जागेंगे, जग जागेगा।

नवोदय क्रांति परिवार, भारत के संस्थापक जेबीटी शिक्षक संदीप कुमार ढिल्लो भी कहते हैं कि बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान को सफल बनाने के लिए ऐसे प्रयास बहुत जरूरी हैं।

बोधराज
जेबीटी अध्यापक
जीपीएस वार्ड-10, पानीपत, हरियाणा

प्यारे बच्चो!

'बाल सारथी' आपका अपना पन्ना है। हम चाहते हैं कि इसमें आपकी रचनाओं को स्थान दिया जाए। आपने कोई मौलिक कविता, कहानी या अन्य विधा की रचना लिखी हो तो अपने अध्यापक की सहायता से हमें ई-मेल या डाक द्वारा भेजें। आपकी रचनाओं को प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता मिलेगी।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- तुम्हारी यामिका दीदी

सामान्य ज्ञान

प्रश्न-1. भूमध्य रेखा के निकट कौन-सा स्थान है?
उत्तर : इंदिरा प्वाइंट
प्रश्न-2. किस राज्य की समुद्र तटरेखा सबसे छोटी है?
उत्तर : गोवा
प्रश्न-3. भारत के पूर्वी समुद्र तट को किस नाम से जाना जाता है?
उत्तर : कोरोमंडल तट
प्रश्न-4. कौन-सा द्वीप भारत और श्रीलंका के बीच में स्थित है?
उत्तर : रामेश्वरम
प्रश्न-5. भारत के किस स्थान को काला पानी नाम से जाना जाता है?
उत्तर : अंडमान निकोबार
प्रश्न-6. भारत के किस स्थान को 'सफेद पानी' के नाम से जाना जाता है?
उत्तर : सियाचिन
प्रश्न-7. भारत में कितने राज्य हैं?
उत्तर : 28
प्रश्न-8. भारत में कितने केंद्रशासित प्रदेश हैं?
उत्तर : 9
प्रश्न-9. किस राज्य को पहले NEFA के नाम से जाना जाता था?
उत्तर : अरुणाचल प्रदेश।

प्रेषक-
भूपसिंह भारती, शिक्षक,
राजकीय माध्यमिक विद्यालय डेरोली अहीर
जिला- महेन्द्रगढ़, हरियाणा

पहेलियाँ

1. मुखिया हूँ मैं सभी ग्रहों का,
लोग कहें मुझको इक तारा,
मेरे होने से जीवन सम्भव
रोशन करता मैं जग सारा।

2. जिसके आँगन में जीवन संभव
नीला ग्रह जिसको सब मानें,
सूरज के चहुँ ओर घूमे
नाम बताओ तो हम मानें।

3. बच्चों का हूँ प्यारा मामा,
लोग कहें मुझे चंदा मामा
मेरे आँगन में पहले आया कौन?
बोलो बच्चो क्यों हो मौन?

4 मेरा कोई रंग नहीं है,
मेरी कोई गंध नहीं है,
मेरा कोई स्वाद नहीं है,
दो अक्षर का मेरा नाम
प्यास बुझाना मेरा काम।

1-सूरज, 2-पृथ्वी, 3-नीलार्मस्ट्रोंग, 4-पानी

डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव
रॉवगंज कालपी जालौन, उत्तर प्रदेश-285204

बरसे पानी

रिमझिम-रिमझिम बरसे पानी।
चहक उठी है चिड़िया रानी।।
हरियाली पेड़ों पर छायी।
डाल-डाल पर वह लहरायी।।

गलियाँ सारी सूनी रहतीं।
रिमझिम धारा उसमें बहती।।
मिट्टी से खुशबू है आती।
सबके मन को वह हर्षाती।।

रंग-बिरंगी तितली आती।
बैठ पुष्प पर वह मुस्काती।।
पुष्प रसों को वह पी जाती।
जीवन में खुशियाँ बिखराती।।

पानी की बौछारें आतीं।
सब के तन-मन को भिगाती।।
जब-जब आती बरखा रानी।
सबको लगती बड़ी सुहानी।।

प्रिया देवांगन प्रियू
पंडरिया
जिला- कबीरधाम
छत्तीसगढ़

करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान

विद्यालय में सब उसे मंदबुद्धि कहते थे। उसके गुरुजन भी उससे नाराज़ रहते थे, क्योंकि वह पढ़ने में बहुत कमजोर था और उसकी बुद्धि का स्तर औसत से भी कम था। कक्षा में उसका प्रदर्शन हमेशा ही खराब रहता था। बच्चे उसका मजाक उड़ाने से कभी नहीं चूकते थे। पढ़ने जाना तो मानो एक सजा के समान हो गया था। वह जैसे ही कक्षा में जाता, बच्चे उस पर हँसने लगते। इन सबसे परेशान होकर उसने स्कूल जाना ही छोड़ दिया।

अब वह दिन भर इधर-उधर भटकता और अपना समय बर्बाद करता। एक दिन इसी तरह कहीं से जा रहा था, घूमते-घूमते उसे प्यास लग गयी। वह इधर-उधर पानी खोजने लगा। उसे एक कुआँ दिखाई दिया। वह वहाँ गया और कुएँ से पानी खींच कर अपनी प्यास बुझाई। तभी उसकी नज़र पत्थर पर पड़े उस निशान पर गई जिस पर बार-बार कुएँ से पानी खींचने की वजह से रस्सी का निशान बन गया था। वह मन ही मन सोचने लगा कि जब बार-बार पानी खींचने से इतने कठोर पत्थर पर भी रस्सी का निशान पड़ सकता है तो लगातार मेहनत करने से मुझे भी विद्या आ सकती है। उसने यह बात मन में बैठा ली और फिर से विद्यालय जाना शुरू कर दिया। कुछ दिन तक लोग उसी तरह उसका मज़ाक उड़ाते रहे, पर धीरे-धीरे उसकी लगन देखकर अध्यापकों ने भी उसे सहयोग करना शुरू कर दिया। उसने मन लगाकर अथक परिश्रम किया। कुछ सालों बाद यही विद्यार्थी प्रकांड विद्वान के रूप में विख्यात हुआ।

विनय मोहन खारवन
गणित प्राध्यापक
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, जगाधरी, यमुनानगर, हरियाणा

खुले हमारे स्कूल

अहा! सुनो माँ फिर से अब तो,
खुले सभी स्कूल।

माँ मेरी है ड्रेस कहाँ पर,
ढूँढो बैग-किताबें।
टाई बैल्ट कहाँ रक्खी हैं,
जूते और जुराबें।

कुछ अच्छा चटपटा बनाकर,
लंच बॉक्स में रखना ।
कैसा बना जानने को माँ,
पहले तुम ही चखना।

पढ़ा-पढ़ाया था जो कुछ भी,
सभी गया हूँ भूल ।
अहा! सुनो माँ फिर से अब तो,
खुले सभी स्कूल।।

फिर से प्यारे दोस्त मिलेंगे,
कक्षा पुनः सजेगी।
तरस गये हैं कान वही फिर,
टन-टन बेल बजेगी।

सर-मैडम से फिर कक्षा में,
पाठ पढ़ेंगे अपना।
अभी अधूरा छूट गया था,
पूर्ण करेंगे सपना।

बंद रहे स्कूल अभी तक,
उड़ी फील्ड में धूल ।
अहा! सुनो माँ फिर से अब तो,
खुले सभी स्कूल।

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव
कोमल
व्याख्याता-हिन्दी
अशोक उमा
विद्यालय,लहार
भिण्ड, मप्र

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

आदरणीय अध्यापक साथियो व प्यारे विद्यार्थियो! प्रस्तुत है खेल-खेल में की जा सकने वाली कुछ विज्ञान गतिविधियों के साथ यह अंक। अधिकांश विद्यार्थियों ने विद्यालय में आना शुरू कर दिया है। वह सब विज्ञान गतिविधियों के अंतर्गत कम खर्च में की जा सकने वाली विज्ञान गतिविधियों का आनंद उठा सकें और उनसे सीख सकें। इसी उद्देश्य को पूरा करती विज्ञान गतिविधियाँ करवानी शुरू की गई हैं। इस बार कुछ बच्चों को एक सेट के रूप में एक डीसी मोटर, कनेक्शन वायर, दो एलईडी, एक फैन ब्लेड, एक स्विच व एक बैटरी कैप तार सहित दी गई। इस सामान का प्रयोग करके बच्चों ने बहुत सी विज्ञान गतिविधियाँ कीं।

1.मोटर से गेंद घुमाओ-

बच्चों को उपरोक्त सामान दिया गया। इसे पाकर उन्होंने बहुत से विज्ञान खिलौने बनाए। इस सामान को पाकर जैसे बच्चों के हाथ कोई खज़ाना लग गया। इन सब के प्रयोग से घूमती गेंद नाम से एक खिलौना बनाया। एक प्लास्टिक का डिस्पोजेबल गिलास लिया उसके नीचे छोटा सा सुराख करके उसमें मोटर के एक्सल को फँसा दिया। एक बैटरी से कनेक्ट करने पर मोटर के एक्सेल के साथ गिलास भी घूमने लगा और उसमें एक हल्की प्लास्टिक की गेंद डाल दी। बच्चों ने देखा कि अब गेंद भी गिलास की दीवार के साथ घूमने लगी, जैसे मौत के कुएँ में मोटरसाइकिल घूमती है। बच्चों ने इस साइंटिफिक टॉय से खेल का बहुत आनंद लिया। उन्होंने इसमे जड़त्व, अपकेंद्री बल, क्रिया प्रतिक्रिया व कंपन, यांत्रिक ऊर्जा इत्यादि अनेक संभावनाओं पर चर्चा की।

2.मेरी न्यूटन डिस्क-

इसी सामान की सहायता से बच्चों ने न्यूटन डिस्क बनाई। न्यूटन डिस्क, जिसे रंग गायब करने वाली रंग डिस्क के रूप में भी जाना जाता है। यह एक प्रसिद्ध भौतिकी प्रयोग है जिसमें डिस्क के ऊपर अलग-अलग रंगों में पैटर्न होते हैं जो तब सफेद दिखाई देते हैं, जब यह बहुत तेजी से घुमाई जाती है। बच्चों ने अपनी डिस्क बनाने के लिए सूर्य के प्रकाश के विक्षेपण पट्टी वाले सातों रंगों को चुना व स्केच पैनों से एक 6 सेंटीमीटर व्यास के हार्ड पेपर की वृत्ताकार डिस्क में रंगा। डिस्क के बीचों बीच एक सुराख करके मोटर के एक्सेल पर चढ़ाकर मोटर को बैटरी से जोड़ कर घुमाया तो बच्चे देख कर बहुत

प्रसन्न हुए कि सातों रंग अब आपस में एकाकार हो गए हैं और डिस्क उन्हें सफेद रंग की नज़र आ रही है।

3.फूँक मारकर एलईडी जलाओ-

जैसे ही बच्चों को डीसी मोटर मिली तो उनके मन में तरह-तरह के ख्याल आने लगे, क्योंकि डीसी मोटर देते वक्त मैंने उन्हें बताया था कि यह इलेक्ट्रिक करंट देने से घूमती है और अगर इसे किसी तरह से खुद घुमा दिया जाए तो यह इलेक्ट्रिक करंट उत्पन्न भी करती है। कक्षा आठ के बच्चों ने अपने बुद्धि कौशल का प्रयोग करते हुए इसके एक्सेल पर फैन ब्लेड लगाया और जो बैटरी की कनेक्शन कैप थी उसकी दोनों तारों के साथ एक एलईडी बल्ब कनेक्ट करके फैन ब्लेड को फूँक मारकर घुमाया। किसी ने बताया कि वह जब इसे टेबल फैन के आगे ले गया तो मोटर तेजी से घूमने से

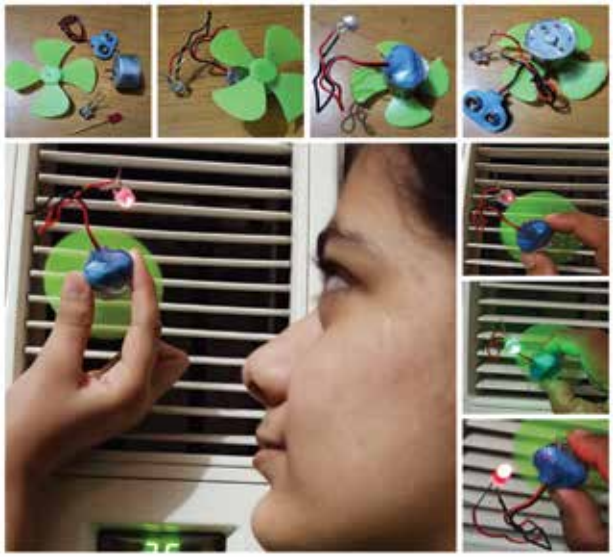

एलईडी काफी तेज़ चमकने लगी। बच्चों की खुशी का ठिकाना नहीं था कि उन्होंने अपना डीसी जनरेटर तैयार कर लिया। डायनमो के साथ साथ बच्चों को पवन चक्की से विद्युत उत्पादन (विंड मिल) भी समझ में आया। एक छात्रा अफसाना ने बताया कि अगर फैन ब्लेड के पर हल्के से मुड़े हुए नहीं होंगे तो यह नहीं घूमेगा।

4.सिक्के को कप में गिराओ-

यह गतिविधि न्यूटन के प्रथम नियम जड़त्व के नियम पर आधारित है। एक पेपर कप लेते हैं। उसमें रेत या मिट्टी भर लेते हैं। एक बिना गढ़ी हुई पेंसिल यानी नई पेंसिल उस रेत में गड़ा देते हैं। उस पेंसिल के ऊपरी सिरे पर एक सिक्का रखते है, जैसे 5 रुपये का सिक्का। उसके बाद अपनी एक उँगली से पेंसिल के मध्य में चोट मारते हैं। तो हम देखते हैं कि पेंसिल तो साइड में चली जाती है, लेकिन सिक्का कप में गिरता है। सिक्का दूर नहीं गिरता। ऐसा इसलिए होता है कि हमने बल केवल पेंसिल पर लगाया है सिक्के पर कोई डायरेक्ट बल नहीं लगाया इसलिए सिक्का अपनी विराम की अवस्था में परिवर्तन का विरोध करता है। पेंसिल बल लगाने के कारण एक साइड पर हो जाती है, लेकिन सिक्का अपनी पूर्व विराम की स्थिति में रहता है। नीचे से पेंसिल हट जाने के कारण वह कप में गिर जाता है। बच्चों ने इस गतिविधि को बहुत बार करके देखा और इस गतिविधि का आनंद लिया।

5. क्या कोयला नहीं देखा कभी?

कोयला एवं पेट्रोलियम पाठ आठवीं कक्षा में पढ़ाते समय मुझे मालूम न था कि

कोयला बच्चों के लिए इतना कौतूहल का विषय बन जाएगा। इसका मुझे अंदाजा नहीं था कि बच्चों ने कोयला नहीं देखा होगा कभी। उनमे से अधिकांश ने कहा कि हमने कोयला नहीं देखा। कक्षा आठ के छात्र मुनव्वर ने यह जिम्मेदारी ली कि वह कहीं से भी कोयला लेकर आएगा। उसने एक कोयले के टुकड़े का इंतजाम कर लिया। अगले दिन जब कक्षा में कोयला लाया गया तो बच्चों ने वह देखा। इससे यह पता लगता है कि जो वस्तु प्रचलन से निकल जाए वह नई पीढ़ी को पता ही नहीं चलती है। पाठ पढ़ने के साथ-साथ बच्चों ने पहली बार कोयला देखा। अब उनसे कोयले के निर्माण, कोयले के गुण, कोयले की गुणवत्ता के आधार पर किस्मों का वर्गीकरण, कोयले के सह-उत्पाद व उपयोग के बारे चर्चा करना आसान हुआ।

ईएसएचएम सह विज्ञान संचारक
राउवि शादीपुर, खंड जगाधरी, जिला यमुनानगर, हरियाणा

गणित बिन सब सून

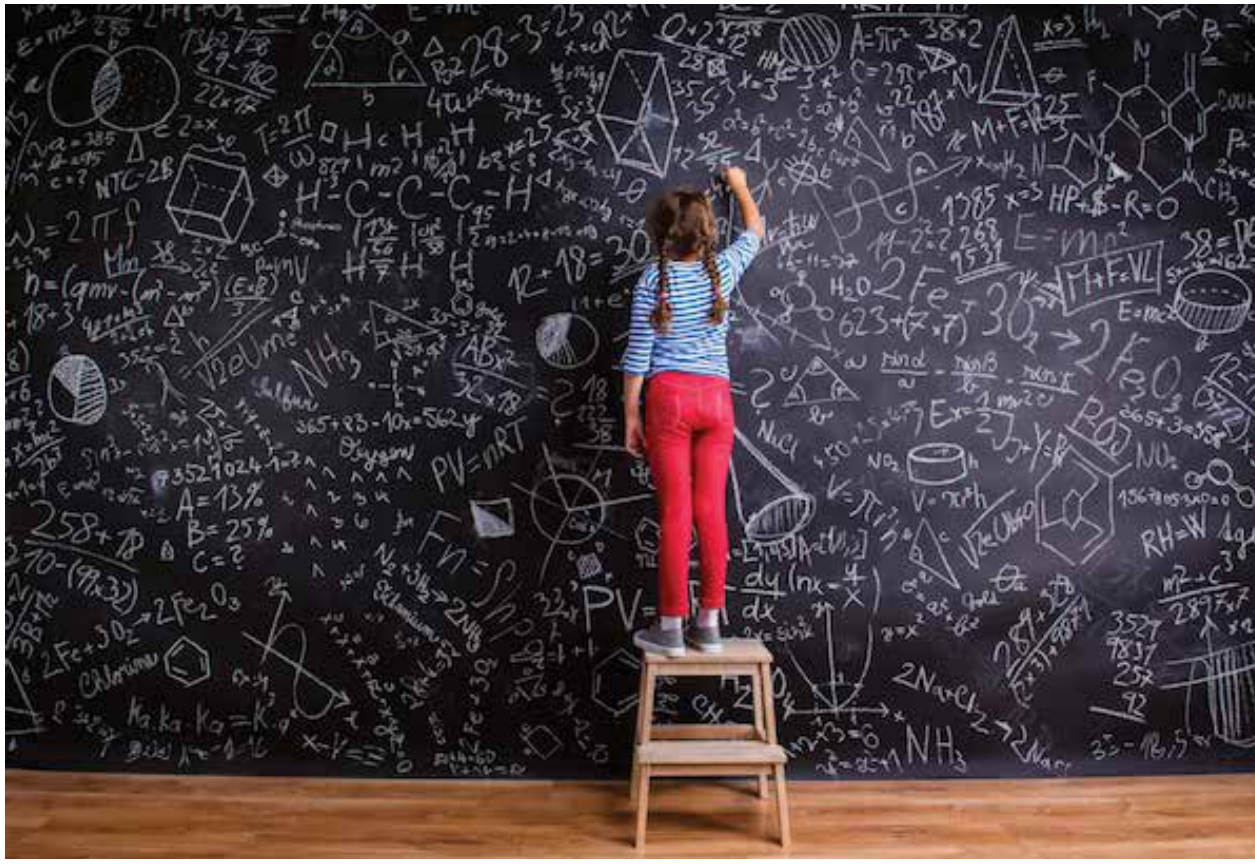

गणित का नाम लेते ही बच्चों को नींद आने लगती है। एक बेहद रोचक व जिंदगी भर काम आने वाले विषय की छवि बच्चों में अच्छी नहीं है। आखिर बच्चे भागते क्यों हैं गणित से। बच्चे गणित को हव्वा क्यों समझने लगते हैं। इसका कारण सीधा सा है, हम बच्चों को गणित सिर्फ और सिर्फ किताबों तक सीमित रख कर पढ़ाते हैं। चाहे अभिभावक हों या शिक्षक, उनको केवल बच्चों को विषय में पास करवाना होता है। शिक्षक चाहे तो गणित को खेल-खेल में इतना रोचक बना सकता है कि बच्चे इस विषय से भागेंगे नहीं। आठवीं कक्षा तक अगर बच्चे ठीक से जोड़ना, घटाना, गुणा करना, भाग करना व पच्चीस तक पहाड़े (टेबल)सीख लें तो मैं समझता हूँ, गणित आसान लगेगा। सुबह उठते ही हमारे दिन की शुरुआत घड़ी में समय देखने से होती है यानी गिनती से, फिर दिन की भागमभाग में भी सारे दिन गिनती चलती है। दुकानदार से सामान लेना हो, ऑटोरिक्शा का किराया देना हो। सब जगह गणित की कैलकुलेशन ही तो चलती है। छोटे बच्चों को खेल-खेल में कुछ रुपये देकर कहा जाए- अगर तुम्हारे पास सौ रुपये हों, दो किलो चीनी लेनी हो। एक किलो चीनी अड़तीस रुपये की हो तो दुकानदार से कितने पैसे वापिस लोगे। अब वो बच्चा घर जाकर भी अपने घर के पास की दुकान से सामान लेते समय पैसों का जोड़-घटाव करने की कोशिश करेगा। बच्चों को गणित केवल किताबी न लगे। उन्हें इससे अपनी जिंदगी का हर पहलू जुड़ता हुआ लगे।

बच्चों को माइनस-प्लस के प्रश्नों में कठिनाई आती है। जैसे 3-2, 2-3, -3-2 आदि। अगर तीन में से दो घटाना हो तो एक आएगा।लेकिन अगर दो में से तीन घटा हो तो बच्चे कन्फ्यूज्ड हो जाते हैं। इसके लिए उन्हें संख्या रेखा की सहायता से समझाना चाहिए।

-4 -3 -2 -1 0 +1 +2 +3

जैसे दो में से तीन घटाना हो तो एक बच्चे को प्लस दो पर बिठा दें। क्योंकि तीन को घटाना है तो उसे कहें कि तीन कदम बायीं तरफ यानी माइनस की तरफ चले। तीन कदम चल कर वो माइनस एक पर पहुँच जाएगा।यानी दो में से तीन घटाए तो उत्तर माइनस एक आएगा। अगर जोड़ना हो तो दायीं ओर यानी बढ़ती संख्या की तरफ चलना है। कक्षा में भी शिक्षक गणित पढ़ाते समय बच्चों को फॉर्मूले याद रखने के कोई भी अपने अनुभव के तरीके बता सकते हैं कि मैं जब पढ़ता तो ऐसे याद रखता था।

गणित नियमित अभ्यास माँगता है। अगर कई-कई दिन गणित की कक्षा न लगे या बच्चे घर जा कर न पढ़ें तो भी विषय से रुचि घट जाती है। गणित का अभ्यास प्रतिदिन करना है चाहे एक घण्टा घर पर करें या विद्यालय में, पर करें जरूर। गणित को बोझ न समझें, फिर जल्दी ही आपको यह विषय भी रोचक एवं मनोरंजक लगने लगेगा।

विनय मोहन खारवन
गणित प्राध्यापक
राकवमावि जगाधरी, यमुनानगर, हरियाणा

वंश

तीन लड़कियाँ घर में जन्म ले चुकी थीं। दो को गर्भ में ही मार दिया था। आखिर पाँच लड़कियों के बाद पुत्ररत्न अवतरित हुआ। माँ बच्चे को जन्म देते ही स्वर्ग सिधार गयी। पुत्र के जन्म की खुशी ने पत्नी की मौत का गम भुला दिया था। वैसे भी वह आदमी दूसरी शादी का सोच रहा था, अपना वारिस जो चाहिए था।

बच्चा बड़ा हो गया था। बाप की गरीबी ही उस बच्चे की विरासत थी। बहनों की शादी की जिम्मेवारी के बोझ तले दबा वह अपने बाप को कोस रहा था। कर्ज ले कर बहनों की शादी की। अब हर तीज-त्यौहार पर उनके घर शगुन ले जाने के खर्चे ने उसकी कमर तोड़ दी थी। खुद की घर-गृहस्थी का खर्च उठाना भारी पड़ रहा था। एक दिन उस ने समाचार पत्र में एक समाचार पढ़ा जिसका शीर्षक था- 'रतन टाटा का वारिस कौन?'

वह सोच रहा था कि अरबों-खरबों के मालिक को वारिस की जरूरत थी, लेकिन उसने शादी ही नहीं की। एक उसका बाप, जिसके पास खाने को रोटी नहीं थी, पर उसे वंश के वारिस की चिंता थी। क्या भुखमरी की विरासत देने की चाह में पिता मुझे दुनिया में ले कर आए।

तभी उसकी इकलौती बेटी ने उसे झिंझोड़ा। वह हड़बड़ा कर उठा व बेटी को गले लगा लिया। उसे खुशी थी कि वंश की चाह में उसने किसी अपने जैसे को पैदा नहीं किया।

विनय मोहन खारवन
गणित प्राध्यापक
राकवमवि, जगाधरी
ज़िला- यमुनानगर, हरियाणा

2021

सितंबर माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

1 सितंबर- राष्ट्रीय पोषण सप्ताह
5 सितंबर - शिक्षक दिवस
8 सितंबर - अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस
11 सितंबर - विश्व प्राथमिक उपचार दिवस
14 सितंबर - हिंदी दिवस
15 सितंबर - इंजीनियरों का दिन
16 सितंबर - ओजोन दिवस
23 सितंबर- हरियाणा वीर एवं शहीदी दिवस
27 सितंबर - विश्व पर्यटन दिवस
29 सितंबर - विश्व हृदय दिवस

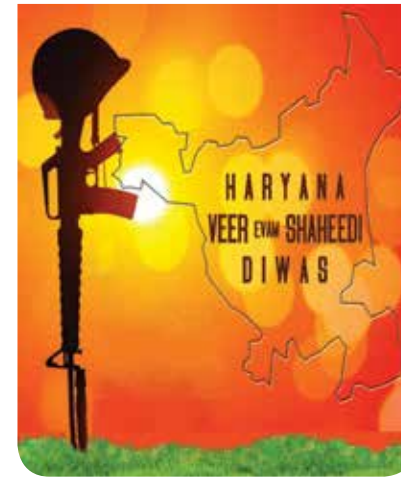

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

Always Live in the Heart of Your Students, You'll be a Master

NIRMAL GULIA

"Education is hard work & it is heart work. We need to help each other and connect with each other. We are all in this together."

Educator –Greg Moffitt

What does it mean-----to teach from the heart ?

Every day we come to our work or job and show up with our purpose. Do you remember why you became a teacher? Do you feel that purpose in your heart each day when you get to school? Often we hear people saying 'what they do because they have to do---what does it mean? I often think---what makes you feel that you are being forced to take the actions you take each day. Is it some person or is it a thought?

'To teach with a heart is the essence that makes teaching a form of caring—when teaching is viewed as a form of caring, teachers become relational geniuses in their own right.' What the question pertains to is this idea of the 'intuitive feel' about the content, how to present it, how to deal with the students. It is situational and cannot be learnt from books. The job of a teacher is not just to mould a student academically but mentally and emotionally as well. A teacher essentially teaches his/her students manners, attitude and way of living among others. He/She also assumes the responsibility of a leader, leading his/her students towards light—manners are all matters of heart and no matter how much even one reads about them, one won't learn them unless they come from within. You can have the best education in the world and you can be a great teacher, but if your heart is not in it, the students themselves come to know and

surely you can't approach them where you must be.

The structure of teaching a classroom of students can take many different forms—you the teacher get to choose each day how you want the structure to be---while we all want the students to learn, what is it we want them to learn? Do we want them to 'read' or 'learn' to read, write or learn to write? These subtle things make a big difference. The head and the heart are essential ingredients of effective teaching and true learning. I truly believe in my teaching experience, once students know they can count on you and you will listen to their problems and truly care or you recognize something is 'off' or even 'going great' with them—even tough students take more of an interest in their own learning and want to do better for you. They share a mutual respect in the relationship which leads to an investment in their own education. Need to form a positive rapport with them---that means a sense of trust needs to be established-an emotional component has to be involved.

Schools are not factories, classrooms are not assembly lines, and students are not all the same.

Each teacher can't work one-one with each student all day long, they can however, adapt their instruction to use language that reaches a wider range of students and begin to use some of the strategies that I prefer to retell stories that are heard, read or experienced, allows the child to see and learn key elements –learning happens, discussion starts, develops problem solving strategies and use language to express their ideas. (Contents may be different in various contexts)

And then the heart comes in- by connecting students to the feelings of the characters, they become emotionally engaged. Emotions are essential for engagement and learning.

We remember and apply learning that is emotionally charged.

Never-never use such kind of words:

"You're nothing----you can't follow simple instructions and even the simplest of tasks seem to be too difficult for you to handle."

The child will never forget. Never avoid him/her.

What changes can you make in your daily routine that will make your teaching more heart centered and make you a master.

'To the world you may be just a teacher but to your students you are a hero, be your own master and the hero of your students.'

Lecturer in English
Diet Machhrauli (Jhajjar)
nirmalgulia1973@gmail.com

Connecting young Minds to School

Strategies to reduce the learning losses on Re-opening of primary schools

"Bacche maan ke sachhe, sare jag ki aankh ke taare,
Ye vo nanhe phool hain jo, bhagwan ko lagte pyare"

Lovely lines of a Hindi song from the movie "Do Kaliyan" (1968). Childhood is the most precious period of human lifetime. An infant only feels and senses the world. On growing into a child the infant starts observing things and happenings. Childhood is a period of exponential development of the brain. Mind of a child is full of numerous questions related to their surroundings and nature. A child wants to get a clear picture of everything and answer of each "why" and "how". It is not only their wish but I think it is their right to get satisfactory answers and fulfill their quest of knowledge.

In the context of COVID-19 scenario, primary schools in Haryana were closed for a long time. This pandemic has cast a strong impression of insecurity among primary class students and has affected their mental health as well. Though through "Ghar Se Padhao Abhiyan", online education has played a crucial role in bridging the gap between school and the student, yet android phone unavailability and lack of data connectivity particularly in rural sections have caused learning gap among students. According to Telecom Statistics of India-2019, internet density in rural area is 25% whereas in urban area it is 98%. At present, 70% rural population does not have internet connection. Moreover, a great difference in academic attitude a student may have developed in standard educational practice and education through online platform. The major

learning loss is on reading and writing fluency that would have been developed during pandemic time. Also, learning of science and mathematics that need a lot of practice and logical thinking has also been affected. Therefore, as the primary schools reopen, these learning gaps needs to be recovered by using novel teaching strategies and making special efforts to fulfill the learning needs of pupils.

Making Kids Aware of Sanitation- First of all, kids need to be made aware about health and sanitation through fun and entertainment. They should be taught about physical distancing, face-masking and importance of cleanliness and sanitation by various activities like-

- How to wash hands properly?
- How to brush teeth properly?
- How to use handkerchiefs?
- How to identifying clean and dirty clothes?

Understanding the Pupils and Their Learning Needs- For pupils of 1-5 classes, teachers should create physically and emotionally safe environment to make them feel that they all are cared for. We must encourage them to participate in school activities viz. flower plantation, drawing and painting competitions, room decoration etc. We must identify, accept and appreciate every child's uniqueness and should make efforts to flourish that trait.

Teaching Social Responsibility- As today's children are tomorrow's nation builders, we must teach them their social responsibility through hidden curriculum like gender equality, team-work, and co-operation with others.

Developing Emotional Skills- Generally, it has been observed that young children cannot easily express their feelings. Either they express their happiness by laughing or their sorrow by tears. We must teach them about the expressions of joy, contentment, anger, fear, sadness by story-telling

method. This will help in increasing their emotional intelligence as well.

Enhancing Vocabulary- We know that language learning is solely based on vocabulary building. Therefore, pupils must be encouraged to learn new words with their synonyms and antonyms as well. They must be encouraged to make a vocabulary chart and add new words to that chart regularly to strength their word power.

Improving Problem Solving Ability- Problem-solving method is helpful in learning of science and mathematics. This technique makes them think about the possible solution independently, enhance their patience and persistence until they find the solution of a particular problem by using their cognitive abilities. Our young minds need to be taught problem-solving by play-way methods like puzzle solving, arrangement of items in a regular pattern, equal distribution of eatables among friends etc.

Inculcating Mind-mapping Methodology- Through mind-mapping methodology, the visual thinking among pupils can be inculcated. This will definitely increase their creative thinking, promote their ideas and enable them to link their learning with their meta-cognitive ability. If they answer some question, they must be asked "How do they know?" This will relate their knowledge with their observations. They can be asked to fill the blanks using drag and drop digital modules or by choosing the option written on chalkboard for a given question. For example, pupils may be asked open-ended question like-

"When do you learn best?" The individual may answer, "I learn best when-

- I learn from my favourite teacher."
- I use colored pen."
- I learn individually."
- I learn in group."

Students of primary classes may

be asked to a draw portfolio of the stories, poems, environmental science concepts, use of mathematical tools using mind-mapping that will summarize the pupil's learning content and most importantly, will enable them to think in a converging as well as in a diverging manner.

Conclusively, in the current scenario, there is a requirement of changing the teaching strategies as well to provide a conducive environment to kids to make them learn effectively. On re-opening of primary schools, it becomes essential for teachers to develop the formative assessment modules to diagnose the learning gap. By teaching them about sanitation, their social responsibilities in future, nurturing emotional health, enriching their word power, improving problem-solving ability will make a strong foundation of the country. This proper use of novel methods will erase the adverse impact of COVID-19 on our educational outcomes. I hope that on re-opening of primary schools all the academic community will come together to work enthusiastically so that our young minds may blossom with happy learning in school environment.

Acknowledgement: Special thanks to SCERT NISHTHA 2.0 training resources.

Dr. Purnima
PGT Physics
GGSSS, Satrod Khas, Hisar
Haryana

Think

Bitten by a writing bug,
That trails blue ink globs,
All over my Midnight blue sleep.
Through half shut eyes Cyan ink tears seep,
Into the inky Indigo Mediterranean deep,
Emersing me in an 'thINKy' Cerulean sea.

I emerge Cornflower fresh from the swim,
Put on my Denims & pen down thoughts within.
The Peacock feather quill at the Azure sky cries.
These Cobalt rivers of thoughts never run dry.
Thoughts bleed dripping from pen to ink to paper,
A liberating Sapphire stream that never wavers.

And I'm no longer blue again,
As the ink drains all emotions within.

Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

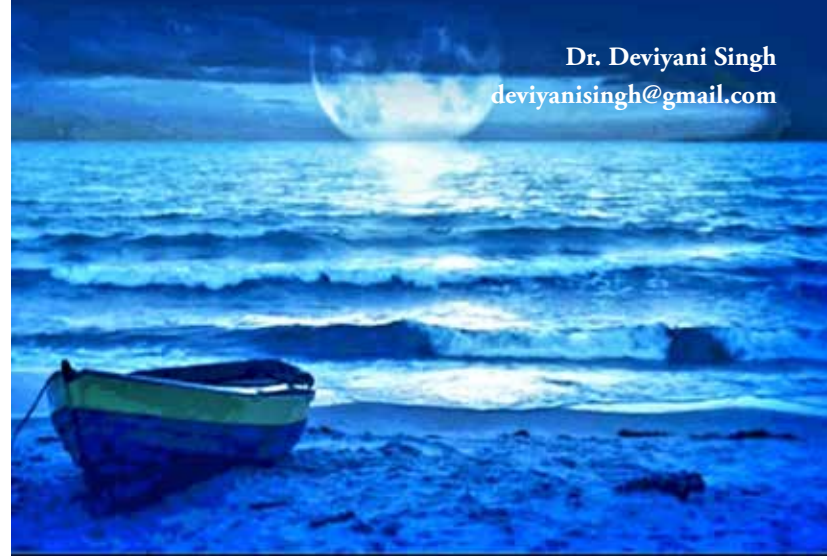

School Bullying

"Many children in my school try to dominate others"
"There are children who take away the lunch boxes and eat our food"
"Teachers do not say anything"
"Monitors in the class threaten us and beat us"
"Girls verbally and emotionally hurt, boys beat up the weaker ones"

Children's voices from Baat Nanhe Dilon Ki Radio Programme

Dr. Rashima Grover

Anand was a young boy studying in a school only consisting of boys. He was not aggressive like other boys. He did not like football and other games played by boys of his age. He was soft-spoken and quiet, not boisterous like his other classmates. He loved dance and studying. Sadly, a few boys in his class started being mean to him and bullying him every day. They would call him names like 'girly' and 'Anandita' instead of Anand! They used to tease him every day. They would tell him he was like a girl and crack jokes about him. They constantly made fun of him and this teasing almost drove him to depression. He would be on the verge of tears every day after school and cried himself to sleep every night. However, Anand's parents gave him right support and help to fight back this situation. Sadly and unfortunately incidents like the above do occur in schools. The term is known as bullying and it is a very humiliating and painful experience for the victim. But right steps taken by teachers and parents at the right time can help the child to cope with the situation.

Every student has the right to spend each day at school without being bullied, harassed or intimidated. Schools are concerned with improving learning outcomes for students in a safe and supportive school environment. Students whose schooling is affected by bullying, or who are suspended from school because of their participation in bullying, have reduced learning opportunities. By addressing the issue of bullying in a positive way the learning outcomes of many students can be improved.

Bullying in schools is a universal problem. The rigorousness of the problem may fluctuate from school to school. In recent years, the constant media attention has made bullying a global issue. Many schools have been forced to evaluate their teaching methods and add new policies on anti-bullying behavior.

BULLYING

School Bullying is widely regarded as a serious personal, social and educational problem which affects a substantial portion of school children. Psychological, emotional, cyber, social or physical harassment of one student by another at school or within the school community. This includes at school and within its grounds, in transit between school and home, local shopping and sporting centres, at parties or local parks and in cyberspace. The playground is the most common place for bullying to occur.

Bullying involves a desire to hurt + hurtful action + a power imbalance + (typically) repetition + an unjust use of power + evident enjoyment by the aggressor and a sense of being oppressed on the part of the victim.

Forms of School Bullying

To combat the victimization of school bullying, it is mandatory to acknowledge the various forms of school bullying in which it prevails in our educational institutions.

Physical Bullying, Verbal Bullying, Social Bullying, Teenage Bullying, Individual Bullying

Physical Bullying

Physical Bullying is any unwanted physical contact between the bully and the victim. This is one of the most easily identifiable forms of bullying. Examples include:

- Punching, Pushing, Shoing, Kicking and Inappropriate touching
- Tickling, Headlocks, Teasing and Fighting School pranks
- Use of available objects as weapons

Verbal Bullying

Verbal Bullying is any slanderous statements, accusations that cause the victim undue emotional distress. Examples include:

- Directing foul language at the target
- Using derogatory (insulting) terms or playing with the person's name
- Commenting negatively on someone's looks, body etc.
- Personal abuse, Tormenting, Harassment, Being laughed at

Social bullying

Social bullying or indirect bullying is characterized by threatening the victim into social isolation.

- Spreading malicious rumors
- Keeping certain people out of a "group"
- Getting certain people to "gang up" on others
- Making fun over certain people
- Ignoring people on purpose-the silent treatment, also known as 'Sending to Coventry'
- Harassment provocation

Teenage Bullying

Teenage boys and girls victims are confronted with teasing or exposing which brings shame and withdrawal symptoms. At times the names of the victim is turned and twisted to mean something obnoxious. For example, Rehaan is called upon as Rihanna; Utkarsh is twisted as Oot or Shanti is changed to Ashanti meaning (Shanti=peace; Ashanti=chaos); Praful is called as a Fool; Loveleen is simply asked to Love and so on. Subtle, psychological effect is the result of bullying at this level. The bullied victims try to hide from the bully by skipping school, feigning illness but do not divulge details to anyone. They feel miserable and extremely secluded. They bear the brunt silently, as they fear the bullies may attack them repeatedly, if

they disclose their identity.

Individual Bullying

Individual Bullying is one-on-one bullying. It can take place everywhere where pack bullying can, and also in smaller areas into which a pack can't fit, such as bathrooms.

Symptoms of Victimization of Bullying

If the following symptoms are shown by the students repeatedly, it is very likely he is being bullied at school:

- Comes home with torn clothing or missing belongings
- Appears sad ,moody, depressed or anxious especially returning home from school
- Prefers to be alone
- Is afraid of going to school
- Vomiting
- Sleep disturbances including Insomnia and Nightmares
- Frequently headaches, or stomach aches, feeling sick or faking illness
- Changes in eating habits, like suddenly skipping meals or binge eating. Kids may come home from school hungry because they did not eat lunch.
- Declining grades, loss of interest in schoolwork, or not wanting to go to school

- Sudden loss of friends or avoidance of social situations
- Feelings of helplessness or decreased self esteem

Role of Teachers in Combating School Bullying

Bullying can occur at any age and across cultures, gender and socioeconomic groups. Many students are likely to experience bullying at some time in their schooling, as the person being bullied, the bystander or as the bully. Bullying can be a humiliating and embarrassing experience for a child which can demoralize them.

If the child is being bullied in his school, it is very incorrect to on part of parents or teachers to ignore this issue. The help and support of parents and teachers is very important to help the child cope with bullying. Teachers, students, parents, caregivers and members of the wider community have a responsibility to work together to address bullying.

PGT English
Aarohi Model Senior Secondary School
Ramgarh Pandwa,
Kalayat, Kaithal, Haryana

Meditation-A scientific way to control human mind

Dr. Himanshu Garg

Meditation is one of the oldest and simplest techniques to control the mind. It is a technique that gives us a remote to control our mind inspite of the mind controlling us. Some people think that meditation is a tedious task. Rather it is easier than other techniques. 80% of our energy that was flowing outside begins to accumulate inside with the regular practice of meditation. It helps us in listening to our own inner wisdom. Our mind is always busy in making comparisons, complaints, judgments, dislikes etc. that leads to anxiety and depression. It is not possible to stop the mind's useless activities but we can control and slow down the flow of our thoughts. Meditation connects you with yourself and with your inner wisdom.

Meditation has been in practice from ancient times for physical improvement, emotional balance and for spiritual benefits. It is a totally scientific based theory. Actually, the regular practice of meditation changes the size of the human brain. Scientists have proved that the regular practice of meditation for 8 months can change the size of the human brain from three sides. These changes in three sides make the following effects on human

nature-

1. The changes in the left part of the brain increase the capability to learn new things and it increases the memory also.
2. The second part reduces the ability to generate new unnecessary thoughts. It increases the concentration power of the mind.
3. Meditation also decreases the cell volume of the brain that helps us to control fear, anxiety, stress and depression.

Other Benefits of Meditation

- It is also helpful in controlling bad habits by increasing will power. Research has proved that meditation leaves a long lasting positive effect on the human mind and they leave their bad habits for a long time.
- It helps in reducing the CRP(C Reactive Protein Level) and it is directly beneficial for our heart. It gives strength to the heart and reduces the chances of heart attack, heart failure etc.
- Inspite of this, it also reduces the blood pressure of the human body and protects us from various serious diseases.
- Normally a human being breathes 10 to 12 times per minute. But during meditation they breathe only 3 to 5 times per minute. It increases our life span as well as we look and feel young for a long time. It gives genetic benefits also.
- In 2004, Davidson's experiment proved that a meditator releases 20 times the normal level of Gamma waves. These gamma waves are directly associated with self-control, intelligence and happiness. The persons who meditate regularly are surrounded by positive thoughts and have enough power to protect them from negative thoughts. It makes us happier.

How to meditate?

It is very easy to start the meditation process. All we have to do is to sit in a straight and comfortable posture and close our eyes. Simply look at whatever is being displayed on the mind's TV. We can do meditation even while walking, jogging etc. but it requires a lot of regular practice. We can begin meditation anywhere anytime but the practice of meditation in the same place and at the same time gives better results. In meditation, we focus on watching our thoughts. Don't impose any pressure when you look inwards. Get deeper and increase the practice time day by day. The standard time for meditation should be 15 minutes twice a day. Group meditation helps to concentrate the mind easily and quickly. So it gives more benefits to meditators. If we want to live life to the fullest, meditation is required. We spend a lot of time in gyms or in parlours to shape and beautify our body. But what do we do for our soul? Meditation is necessary to fill positivity in our thoughts to beautify our soul.

Let's start meditation…
Meditate more and more...
Go deeper into your mind...

Assistant Professor
Govt. College for Women, Jind
himanshujind@yahoo.com

Stranger than Fiction

Dr. Deviyani Singh

This strange journey began with a name – Pfutsero, pronounced as 'foot zero' but not 0, the arithmetical symbol denoting the absence of all magnitude or quantity. It was a place in Nagaland, the block headquarters in Phek district. It was the coldest inhabited place in Nagaland with temperatures plummeting to minus zero degrees in winter and as a kid I thought that was why it was named Pfutsero!

It was in the 70's my father was posted in the army station there and I would join him during my vacations. It was declared a field station so families were allowed to visit just for 3 months in a year. Only parts of Nagaland had been developed and most of the areas were still not accessible with thick jungles and a lot of insurgency prevalent.

We drove up a long winding road on the steep mountainside in my Father's army Jonga. I experienced the ethereal feeling of passing through clouds for the first time. I was so excited I stuck my head out of the window feeling the cold but exhilarating breeze.

My Father promised to take me to visit a very remote Naga village in the interior areas of the Mon district. It was an adventure I would never forget. As we drove deep into the jungles of Konyak territory my father told me all about the head hunting tribes that existed there.

He turned around and asked me- "What if your value in society depended on the number of people you had beheaded?"

I was too astounded to reply. He explained that the rite of passage for Konyak boys to become warriors was to bring the decapitated heads of enemies. Only then could they earn facial and body tattoos. Depending on the number of heads they had taken, they wore necklaces with little brass sculpted skulls. The Konyak women wore grass skirts and bead necklaces on bare chests. The men wore only a loin cloth and fierce head gear with wild boar tusks and hornbill feathers.

On the way we had to cross a mountain rivulet with a temporary log bridge. When we reached there we found the man made bridge had got washed away as the stream was in spate. We had to drive through the

water and I could feel the wheels of the jonga slipping on the river stones. I felt panic well up in my throat and thought we were being swept away as water entered our vehicle. My Father who was an expert at navigating such hazards immediately accelerated and the Jonga powered forth with engines in full throttle. I was so frightened, my heart was in my mouth. I heaved a sigh of relief when the wheels touched terra firma again.

After a long drive through thick jungles we reached the village. At the entrance was a majestic bamboo gate carved out in Naga style with ethnic motifs and symbols of the tribe. The villagers could see our vehicle ascending the hill top. A group of charming young girls gathered around in anticipation at the entrance and welcomed us with garlands. Their eyes shone with glee and it was clear to me that they didn't have many visitors. They were thrilled to see a North Indian girl like me as they only saw so many soldiers. They led us inside to the village courtyard and we were greeted by the aged headman. He was also the Pastor, Head Master and Post Master, since he was the only educated person in the village. With his calloused hand he grabbed mine and shook it vigorously. He smiled at me baring two black front teeth. He had horrible bad breath. He offered me a hollowed bamboo mug full of local rice beer called 'Madhu'. However before I could take it, he drank half and then gave it back to me, gesturing to finish it. That was their traditional welcome of literally sharing a drink.

He showed me around the village and took me to the place the tribals revered most of all. It was not some sacred place but it turned out to be the clinic of the local doctor that was located next to the village. I was greeted with a most unusual sight. A tribal came out smiling, covered from head to toe in a white paste of some sort, followed by another. I went inside and saw the doctor's assistant was busy preparing a paste. He had a bottle of mosquito repelling oil and a can of foot powder that was issued to the soldiers to prevent blisters during long marches.

I asked him, "What the devil are you doing mixing the two?" But he just kept muttering some tribal 'mumbo-jumbo' and grinned at me. I saw there were a number of patients with stomach ailments. They were being doled out blue and white tablets. These tablets looked suspiciously similar to the ones used to purify water in the camp. He was giving

them the white tablet and then making them dance while chanting around the 'sigri' (stove) and then after some time he would give them the blue tablet.

In the next room a short man in a white coat stood poised with an injection in his hand and my jaw dropped at what I saw next. The doctor was making the tribals stand at a slight distance and throwing the injection at the patients like a dart. Instead of injecting the liquid and pulling it out straight he would twist it in further and rotate it vigorously, till the patient howled in pain. It was too much for me to watch and I ran out almost in tears. I went and complained to the senior officer at the camp and asked that the doctor's license be revoked for committing such atrocities.

I went to bed that night feeling really disturbed as to how these so called civilized people were entertaining themselves at the expense of the poor ignorant tribals. I drifted off into a restless sleep. I had a nightmare of being chased by head hunters; they were about to chop my head off with a 'Dah'(long knife) and throw me in a pot of boiling water. I could feel their hands on my shoulders pinning me down ... I woke up in a cold sweat with my Dad's hand on my shoulder shaking me awake.

He pointed to the window saying, "Look, what you have done."

I jumped out of bed, blinking my eyes against the rising sun and saw there was a long line of tribals standing outside our tent at the camp, waiting to meet me. For a moment I thought my nightmare had not ended. Mr. Toothy tribal headman bowed to me and with the help of the translator told an unbelievable tale. They had come running down in the wee hours of the morning to request me to take my complaint back.

He gestured widely with his hands and explained to me how the earlier doctor was no good. I asked "Why?"

"He treated us without giving any pain. What use is that medicine that does not hurt?"

Then it all dawned upon me in a flash. These tribals had grown accustomed to the crude and rustic ways of their own witch doctor. To their minds unless you make a lot of fuss, noise and cause pain to drive away the evil spirits causing illness, the treatment was no good.

I got dressed and went to the doctor's house to apologise. A Naga helper dressed in western clothes opened the door and ushered me to the study. The doctor still in pajamas came and sat down.

He said, "The tribals volunteer in the hospital and I have recruited a Naga housekeeper."

He gestured to him speaking in fluent Nagamese, "Get some tea, some biscuits, something fried."

A little later, the Naga helper brought back tea and a plate with four black objects on it. He'd fried the biscuits! The Doctor and I had a hearty laugh but nevertheless appreciated the helper's efforts at hospitality.

The Doctor then explained to me how the twisted injection dart game was so endearing to the tribals. The painted mummies I had seen walking out of the hospital was again our good doctor's handiwork.

He said, "When I used to treat skin ailments with a little bit of non-stinging cream it was not convincing enough for the tribals. So I coat their entire bodies with a smelly, pungent concoction."

I asked him, "How do you manage things here without much electricity and water?"

"Since the jungles don't have clean

drinking water there are a host of stomach ailments, like amoebiasis. Sometimes I fall short of antibiotics so I use the water purifying tablets. If it can purify water, why not a stomach?" He said with a wry smile.

Such twisted logic had me bewildered and I just stared at him in awe. Here was a shining example of how a man of science had combined faith healing and tribal practices with his own crazy innovations, making it easier for the tribals to accept modern medicines. He had a band of head-hunting tribals rooting for him even in a desolate, forlorn place. In fact he had done so much good work for the tribals that they literally revered and worshipped him as much as their own tribal witch doctor.

The Doctor then proceeded to tell me a chilling tale. He referred to the fact that I told him I had woken up with a nightmare the other night. He said my nightmare may have been a

premonition. They got news the next morning that a group of the fiercest insurgents had camped in one of the neighboring villages with the intention of carrying out an attack on the army post at dawn but when they heard about the good Doctor's and my father's name they changed their minds and went away.

My father had in fact done a lot of work for the locals. He had helped them get piped drinking water in the villages and got taps installed. Otherwise they had to go down all the way down to the river on foot and carry water back to their villages which were often built high on the hill tops for security reasons. The womenfolk often wasted their entire day just to fetch water for their daily needs. Another popular demand of the villagers was to have a football field which my father with the help of his men managed to find clearings and help them build. My father could speak Nagamese so fluently I used to think he was going to become one of them! He would mingle freely with the locals without fear and dine with them. They had even adopted him and given him a Nagamese name. He had taken care of the village children who were orphans and encouraged them to go to school.

Thus even in this remote place the tribals came to love my father and his battalion who had somehow managed to assimilate themselves into the Naga society. He loved their way of life and closeness to nature. Some of the ex-hostiles had even surrendered and come back to the mainstream. Battalions of BSF (Border Security Force) were raised out of ex insurgents which helped them to get a livelihood after long years of living in the jungles. They maintained the same hierarchy they had in their hostile units.

I was surprised to find these fierce men as normal as us. In fact the battalion even had their own rock band and every evening we would go sit with them and belt out rock ballads at the top of our voices which travelled so well and sounded divine in the cold mountain air. They had even picked up a few popular Hindi film songs. Their lilting accents mingled with our North Indian ones. As we sang together it was difficult to believe that those hands that once held guns were now plucking out notes deftly on the electric guitar.

We sat around the bonfire, the scent of bamboo shoot and Naga delicacies being cooked in the Mess tantalized our nostrils. The smoke rose from chimneys on the hill side. In the distance the faint chimes of the Baptist Church bells could be heard. Fireflies danced about making fairy patterns in the deep woods and the loud chirping of crickets interspersed our ballads. The lights of the valley twinkled below through the mist. As I shivered in the cold night air I knew that my strange journey in this strange land had just begun. I would go on to explore many mysteries of this remote yet enchanting state of India with equally fascinating names of places and people.

As Shakespeare wrote - 'What's in a name, a rose by any other name would smell as sweet'. I like to think of my travels in Nagaland as exquisite and exotic as the Orchid flowers that are found there. Their fragrance lingers on in my memory as fresh as it ever was in my childhood.

******

Disclaimer (This work of fiction is based loosely on a true story however it does not intend any malice towards the tribals or army persons mentioned in it.)

Editor, Shiksha Saarthi
deviyanisingh@gmail.com

Life Lessons from Animals

Human beings are considered to be the super intelligent animals.

But many times we learn lessons of life from nature and animals around us, even though they do not speak our language, they convey powerful messages full of symbolism.

There are a few shubhashitas in Chanakya neeti also which describe the teachings of different birds and animals and what is to be learnt from them.

LION :

The lion takes the things to completion, whether the job it takes up, big or small it has the same approach, it attacks with the same might and finishes it. Lion does not leave midway.

The lesson from lion teaches us to be unbiased towards the different kinds of work we do in our daily life and that we should give 100% to each task we undertake no matter whether it's small or a big one.

The crane teaches us the Single minded Focus. When crane has to catch a fish, it focuses on the fish only; its whole body becomes still to ensure undivided attention to its target.

If we command such concentration and focus, we can achieve anything and everything.

DOG:

The dog teaches us six qualities:

a. Adaptability as it exhibits when it makes do with a little to eat when need arises. This is especially true in new places and jobs. One does not get all facilities and things in the beginning, but that should not affect our efficiency. Start the work and rest of the things will take care of themselves in due course of time.

b. Rejuvenation is another thing we learn from the dog. Even if it gets a short sleep, it is sound sleep. Dog rejuvenates itself completely and is ready to be back on job with full vigour and energy.

c. Alertness is the USP of dog. We have heard stories of dogs how they have saved lives and prevented thefts owing to their alertness. Same level of alertness and presence of mind can be assets for successful a leader.

d. Loyalty: A dog is loyal and faithful to his master. Nothing will induce him to leave his master. His master might be a poor man or even a beggar but, still his dog will not leave him to go with anyone else. A dog worships his master as if he were a God. Similarly if we are loyal to our mission/goal no one can stop us to achieve it.

e. Courage - is contagious. When there is a thief around or there is any danger, the thief may hide anywhere. Yet the dog will use his keen sense of smell to find out where the thief is hiding. We should have the courage to overcome the obstacles instead of getting disheartened by failures.

f. Commitment - Dogs have been known to die to save their masters. A dog might even die of grief after his master is dead. He is certainly a true and faithful friend. Dedication and determination lead us to success.

COCK :

a. Time Management by its punctu-

ality. People set their watches by its calls and rely on it for waking them at right time. Time management helps in winning half the battle due to increased respect for discipline.

b. Taking competition head on and finishing the battles it has started. Fighting till death is the habit of cock.

c. ASSERTIVE especially when it comes to fighting for its turf and rights. It defends its territory fiercely.

d. SHARING & CARING FOR it's near & dears. Be it food or anything cock makes it a point to share with others.

CROW:

a. NOT to wear heart on our sleeves and being secret in emotions.

b. Inventory Management by keeping reserve for adverse times.

c. VIGILANCE by being alert all the time and not trusting everybody.

d. Patience by working hard for long time.

DONKEY:

a. NOT to give up, even when overworked or overloaded

b. Not to surrender, even when challenges are big

c. Always be Contended.

If we imbibe these qualities in our life we will emerge victorious in all our goals.

The Amazon Rainforest Fires

Oh my beloved Amazon blazed on!
Blue skies turned grey, a fiery dusk to dawn.
Dark ominous clouds of putrid smoke,
The ecosystem broke as Earth's lungs choked.

Animals ran screaming searing heat at their feet,
Birds fled burning nests and died of thirst.
Scorched carcasses scattered, too painful to behold.
A burnt out shell of a hellfire that was once their home.

Nature's wrath wreaks havoc at mankinds greed,
The lush forests fall to his lust and endless needs.
As Forest fires rage & animals flee in pain,
Sparrows no longer sing on our window pane.

The parched forests; no longer drenched in rain.
The Lions in the jungle no longer roam or reign.
The Forests we plunder & pollute rivers in vales,
As our greed in development jargon we veil.

In the forest with nature i feel i'm one,
Where concrete jungles have not won.
Mankind from destroying forests must refrain,
As storm clouds gather let's dance in the rain.

I can never forget those days of unrest,
When my tears rained for the Rainforest.

Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

Amazing Facts

1. **Walt Disney had originally suggested using the name Mortimer Mouse instead of Mickey Mouse.**
2. The smile is the most frequently used facial expression. A smile can use anywhere from a pair of 5 to 53 facial muscles.
3. Toronto was the first city in the world with a computerized traffic signal system.
4. Seniors who drink a cup of coffee before a memory test score higher than those who drink a cup of decaffeinated coffee.
5. Venus is the only planet that rotates clockwise.
6. Some octopuses have been known to eat their arms off when they are exposed to stressful situations.
7. The skeleton of a spider is located on the outside of the body. The name for this is exoskeleton.
8. Incas used to create pots in the shape of peanuts that were highly prized.
9. The letter J does not appear anywhere on the periodic table of the elements.
10. The words "abstemioius," and "facetious" both have all the five vowels in them in order.
11. French soldiers during World War I had the nickname "poilu" which translates to "hairy one."
12. Some snails live on branches in trees.
13. Tomato ketchup is a good conditioner for the hair. It also helps get the greenish tinge that some blonde haired people get after swimming in water with chlorine in it.
14. The youngest pope was 11 years old.
15. Did you know you share your birthday with at least 9 other million people in the world.
16. Soldiers disease is a term for morphine addiction. The Civil War produced over 400,000 morphine addicts.
17. The longest freshwater shoreline in the world is located in the state of Michigan.
18. There are bananas called "Red banana" that are maroon to dark purple when ripe.
19. The USA bought Alaska from Russia for 2 cents an acre.
20. The length of brink of the Canadian "Horseshoe" Falls located in Niagara Falls, Ontario, Canada is 2600 feet.
21. The right lung of a human is larger than the left one. This is because of the space and placement of the heart.
22. Native Americans used to use pumpkin seeds for medicine.
23. The pound key (#) on the keyboard is called an octothorpe.
24. The chemical name for caffeine is 1,3,7-trimethylzantihine.
25. Corals take a long time to grow. Some corals only grow one centimeter in one year.
26. Canada has more inland waters and lakes than any other country in the world.
27. Ramses II, a pharaoh of Egypt died in 1225 B.C. At the time of his death, he had fathered 96 sons and 60 daughters.
28. The word "lethologica" describes the state of not being able to remember the word you want.
29. Since its introduction in February 1935, more than two hundred million Monopoly board games have been sold worldwide.
30. The smallest man ever was Gul Mohammed (1957-1997) of India, who measured 1 feet, 10 ? Inches.

https://greatfacts.com/

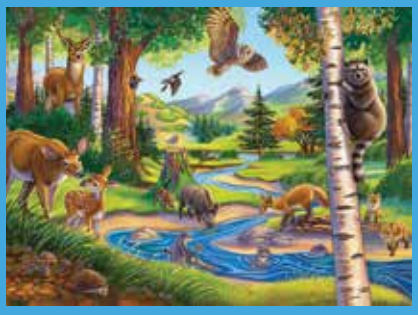

1. Egyptian Queen Cleopatra is said to have died from the bite of a: Lion; Spider; Asp; or Horse? **Asp**
2. What is the fluid component of blood, the '4th state of matter', and ionized gas/electric lamps? **Plasma**
3. Name the famous winged horse from Greek mythology? **Pegasus**
4. Dendrochronology refers to which three of: Bell; Tree; Hair; Ring; Speed; Pull; Dating? **Tree Ring Dating**
5. Assisi, birthplace of St Francis, founder of the Catholic Franciscan Order, is in: Spain; Italy; France; or Mexico? **Italy**
6. The common word/suffix 'berg' in Swedish and German means: Lake; Mountain; Forest; or Ice ? **Mountain**
7. The epic 'Beowulf' (c1000AD), a vast language record, is the oldest surviving poem manuscript in Old: Dutch; English; French; or German? **English**
8. Binomial Nomenclature is a two-part Latin naming and hierarchy system for: Roman roads; Musical instruments; Plants and animals; or Space rockets and satellites? **Plants and animals**
9. Which one of these is not among the four main gases of Earth's atmosphere: Nitrogen; Oxygen; Argon; Carbon dioxide; Hydrogen? **Hydrogen**
10. Which element (Sr) named after a Scottish town was discovered by Sir Humphry Davy in 1808? **Strontium**
11. Strabismus is an imbalance of the: Heart; Hearing; Eyes; or Beard? **Eyes**
12. Roughly the volume in cubic metres of a squash court is: 30; 100; 352; or 12,000? **352**
13. Mechanical arm railway signals are termed (What?) communication system, also used by ships at sea? **Semaphore**
14. Introduced legally in 1876, what vehicular float marking originally included abbreviations for 'Lloyd's Register', 'Salt Water in Summer', and 'Fresh Water'? **Plimsoll Line**
15. What precious stone is a corundum with chromium traces, historically called carbuncle? **Ruby**
16. Colophony, rubbed on violin bows, is better known as a yellow turpentine resin called: Raisin; Rosin; Risin; or Rison? **Rosin**
17. What compound (C7H5NO3S) is 500 times sweeter than sugar, for which it substitutes? **Saccharin**
18. Charon is the single main moon/satellite of: Pluto; Mars; Neptune; or the Sun? **Pluto**
19. What delicacy comes from the creature Husso husso? **Caviar**
20. The iconic 1968 Small Faces album Ogden's Nut Gone Flake was the first LP with an appropriately (What-shape?) cover, originally produced as a lidded tin container: Hexagonal; Triangular; Pentagonal; or Circular? **Circular**
21. Birkdale, Troon, Muirfield, and Sandwich are famous venues for what? **British Open Golf Championship**
22. Sir Ken Robinson (born 1950) and 'most-viewed TED talker' is a famous: Newsreader; Educationalist; Architect; or Footballer? **Educationalist**
23. Match these words and meanings: Pagoda, Palermo, Palmyra, Pangolin - Indian tree, Scaly ant-eater, Buddhist shrine, Capital of Sicily? **Pagoda - Buddhist shrine; Palermo - Capital of Sicily; Palmyra - Indian tree; Pangolin - Scaly ant-eater**

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-271-general-knowledge/

आदरणीय संपादक जी!

मुझे 'शिक्षा सारथी' का गतांक पढ़ने का अवसर मिला। पत्रिका पढ़ कर बहुत अच्छा लगा। इस अंक में आपदा में अवसर, पहेलियाँ, खोजें अपनी कमियाँ, आरोही मॉडल स्कूल रामगढ़ तथा कैरियर के संबंध में प्रस्तुत विषय-वस्तु ने मुझे बहुत प्रभावित किया। इनसे मुझे जीवन में और नया करने की प्रेरणा मिली। पत्रिका के माध्यम से सबको पूरे प्रदेश में हो रही लगभग सभी गतिविधियों का पता चल जाता है।

धन्यवाद।

अभिमन्यु दहिया
प्रवक्ता भूगोल
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
उगाला, खंड- बराड़ा, जिला- अम्बाला, हरियाणा

आदरणीय संपादक महोदय!

नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' के निरन्तर निखरते स्वरूप को देखना अत्यन्त मनभावन लगता है। सभी स्थायी स्तम्भ प्रेरणा-स्रोत एवं दिल को छू लेने वाले होते हैं। विद्यार्थियों में उत्साह भरते कला-उत्सव में डॉ. सुमन कादयान जी ने मानो पंख लगा दिये हों। इसी कड़ी में डॉ. योगेश जी वाशिष्ठ, डॉ. ओमप्रकाश जी कादयान एवं श्री प्रमोद दीक्षित जी 'मलय' ने भी चार चाँद लगा दिए हैं। स्काउट्स गाइड्ज़ के पर्याय अमित कुमार के लिये भी सत्यवीर जी को बधाई। स्वतन्त्रता-दिवस की पावन वेला पर सम्पादन मण्डल की पूरी टीम को पुनः शुभकामनाएँ । आप शिक्षा जगत को यूँ ही महकाते रहें।

पवन कुमार
राजकीय मॉडल संस्कृति प्राथमिक विद्यालय
चुंगी नं 7, लोहारू, जिला-भिवानी, हरियाणा

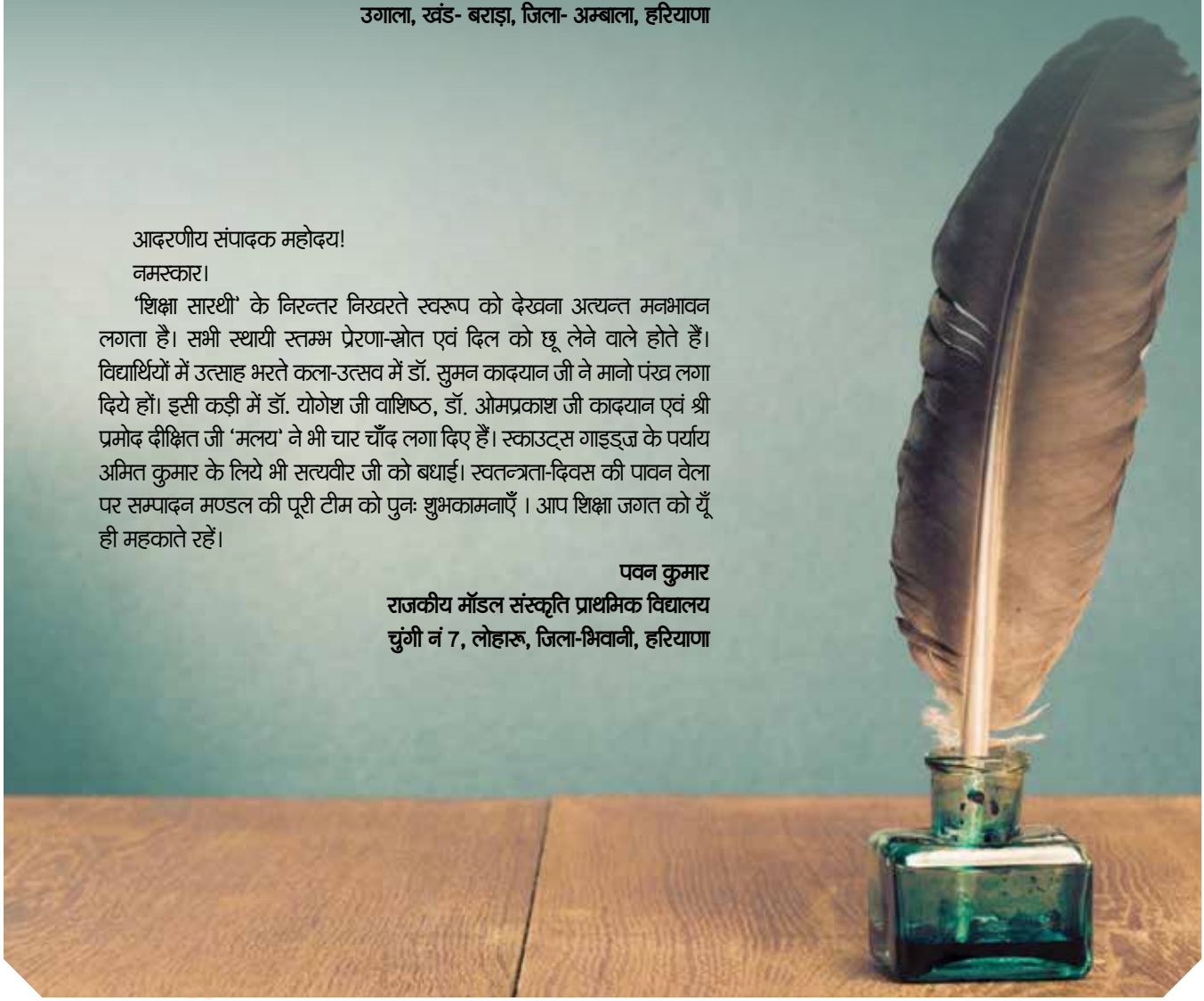

शिक्षक की अभिलाषा

हे शारदे माँ! मेरी है एक अभिलाषा
सांदीपनि जैसा मैं गुरुवर बन जाऊँ ।
कृष्ण-बलराम जैसा शिष्य देकर
मैं अपने कर्म - भाग्य पर इठलाऊँ।।

हे शारदे माँ! मेरी है एक अभिलाषा
मैं चाणक्य जैसा गुरुवर बन जाऊँ ।
चंद्रगुप्त जैसा रत्न देश को देकर
मैं अपने स्वाभिमान पर इठलाऊँ ।।

हे शारदे माँ! मेरी है एक अभिलाषा
राधाकृष्णन जैसा गुरुवर बन जाऊँ ।
मातृभूमि के लिए जीने वाले शिष्य देकर
राष्ट्र गौरव की पताका विश्व में फहराऊँ ।।

हे शारदे माँ! मेरी है एक अभिलाषा
स्वामी परमहंस जैसा गुरुवर बन जाऊँ ।
स्वामी विवेकानंद जैसा शिष्य देकर
युवाओं मे राष्ट्रीयता के भाव जगा जाऊँ ।।

हे शारदे माँ! मेरी है एक अभिलाषा
मैं भी एक सर्वश्रेष्ठ गुरुवर बन जाऊँ ।
अब्दुल कलाम जैसा व्यक्तित्व देकर
मैं भी अपना नाम अमर कर जाऊँ ।।

गोपाल कौशल
नागदा, जिला धार, मध्यप्रदेश

RNI NO: HARBIL/2012/52385 POSTAL REGD NO: HR/AB-102/20-22